चन्दामामा
जनवरी १९८०
Rs 1.50

प्रमेयः

अ़सली पारले ग्लुको तक पहुँचने का
सबसे सीधा रास्ता– उसका नाम.
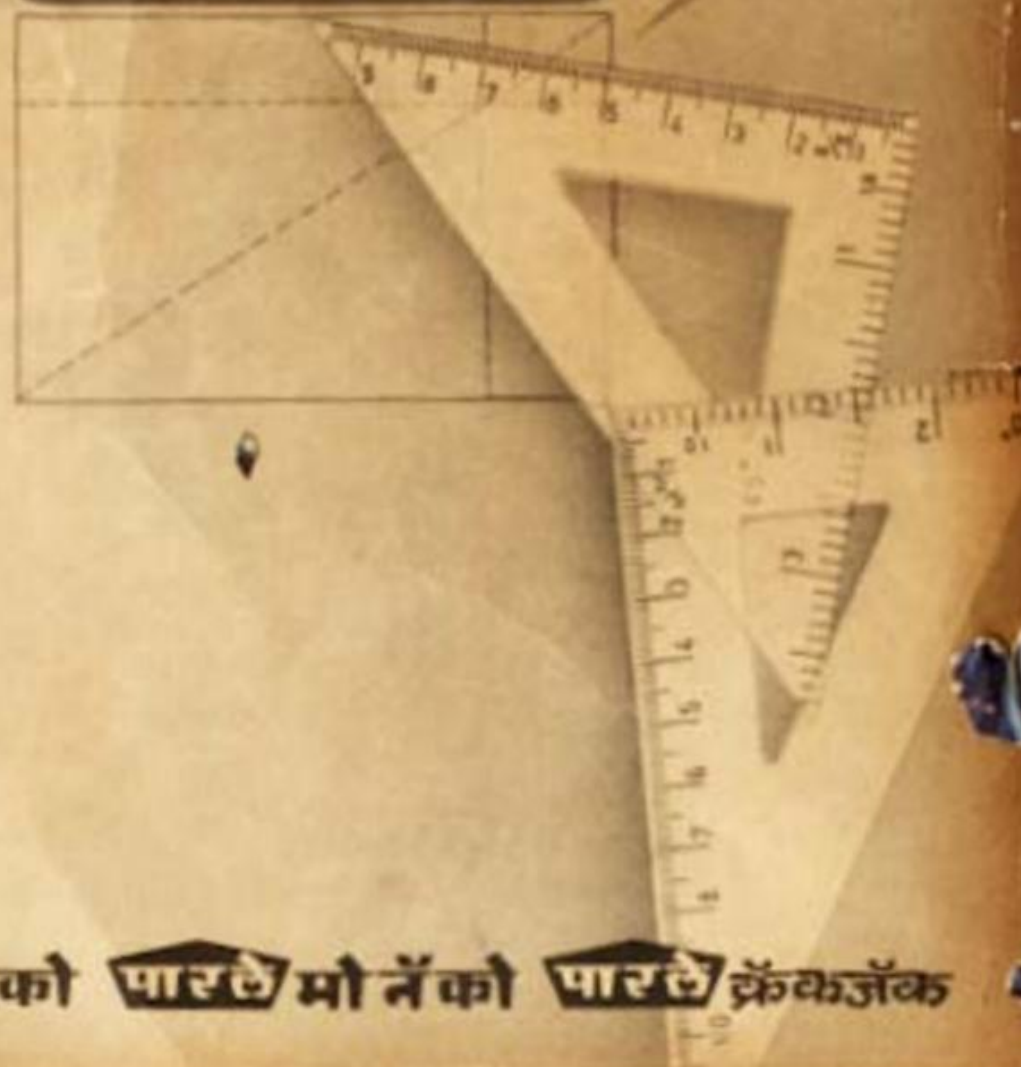
पारले ग्लुको पारले मोनॅको पारले क्रॅकजॅक

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "वचन का मूल्य" है। इस कहानी के द्वारा हमें यह विदित होता है कि मानवों की भाषा का सही अर्थ जानने के लिए कभी कभी कोशों की सहायता लेनी पड़ती है। उनका मूल्यांकन करना हो तो मनुष्य के संस्कार का परिशीलन करना होता है। हम अगर कोई गलती कर बैठते हैं तो हमें डांटनेवालों में हमारे हितैषी भी हो सकते हैं और हम से प्रतीकार लेनेवाले भी।

अमर वाणी

पुंसा मुन्नत चित्तानां द्वय मेव सुखावहम्
सर्वसंग निवृत्ति र्वा, विभूति र्वा सुविस्तरा ॥

[उच्च भाव रखनेवाले पुरुषों को सुख प्रदान करनेवाली चीज केवल दो है—समस्त का परित्याग अथवा अत्यधिक ऐश्वर्य !]

वर्ष : ३२ · जनवरी १९८० अंक : ५

एक प्रति : १-५० : : वार्षिक चन्दा : १८-००

ए. मदनकुमार, बरंपुरम

प्रश्न : भय के वक्त दिल तेजी से धड़कता है, कारण क्या है?

उत्तर : मानव के शरीर में मूत्र-पिंडों के ऊपर रीढ़ के दोनों तरफ़ दो ग्रंथियाँ (Glands) होती हैं, उन्हें "एड्रिनलीस" ग्रंथियाँ कहते हैं। उन ग्रंथियों में ऊपर और नीचे की परतें होती हैं। शरीर की ज़रूरतों के अनुरूप ये ग्रंथियाँ विभिन्न प्रकार के स्रावों को प्रदान करती हैं।

अगर किसी कारणवश ऐसे स्रावों में संतुलन बिगड़ जाता है, तो स्वास्थ्य खराब हो जाता है। अचानक मनुष्य के भीतर भय या उद्रेक पैदा हो जाते हैं, तब एड्रीनलीस ग्रंथि संबंधी भीतरी परत से "एपिनेप्रीस" नामक पदार्थ रक्त में प्रवेश करता है। इसके परिणाम स्वरूप चमड़े के फीके हो जाने के साथ दिल भी तेजी से धड़कने लगता है।

वि. केशव नारायण, व्यासरपाडि

प्र. : सूर्य की विविध दिशाओं में ग्रह होते हैं, लेकिन अगर वे सारे ग्रह एक ही दिशा में हों तो उसका क्या परिणाम होगा?

उ. : कुछ वर्ष पहले कुछ लोगों ने यह अफ़वाह फैलाई कि आठ ग्रह एक कक्ष में आनेवाले हैं जिससे समुद्रों में तूफ़ान आएगा और सारे नगर बह जायेंगे; पर कुछ नहीं हुआ। जिन लोगों ने यह सारा होहल्ला मचाया और जो लोग अपने घर व शहर छोड़कर भाग गये, वे मज़ाक के पात्र बने। पृथ्वी में प्राकृतिक-प्रकोप—बाढ़, भूकंप, असाधारण उल्कापात, अग्नि पर्वतों के विस्फ़ोट—अकसर हुआ करते हैं। पर किसी ने यह नहीं बताया कि ग्रहों के साथ उनका क्या संबंध है?

पर लगभग १८० वर्षों में एक बार सारे ग्रह सूर्य के एक तरफ़ के कक्ष में आ जाते हैं। इसलिए इतिहास के व्यापक समय में आप के कहे अनुसार कभी हुआ होगा। इसका क्या परिणाम होता है, इसे इतिहास पढ़कर हम जान सकते हैं। संभवतः कुछ नहीं होता। हम अनुमान लगा सकते हैं कि अगर कुछ हुआ होता तो वैज्ञानिकों ने इसका पता अवश्य लगाया होता।

अपरीक्षित कारकम्

[७८]

बूढ़ा बंदर बड़ी देर तक शोक मनाता रहा, तब अपने मन में सोचने लगा– "उस दिन मेरी जाति के लोगों ने मेरी सलाह न मानी, इसलिए उनकी यह दुर्दशा हो गई। उस दुष्ट राजा के साथ मैं बदला कैसे लूं? लोग कहा करते हैं कि अगर अपने वंश के प्रति अन्याय होता है, तो जो लोग उसका बदला नहीं लेते हैं, वे परम नीच हैं। मेरे वंश का सर्वनाश हो गया है, इसका मुझे ज़रूर प्रतीकार लेना चाहिए।"

पर उसे कोई उपाय न सूझा। उस दिन बड़ी गरमी थी, इसलिए उसे प्यास लगी। वह पानी की खोज करते एक तालाब के समीप पहुँचा जो कमलों से भरा हुआ था। वहाँ की निश्शब्दता डरावनी थी। वहाँ पर पानी के अन्दर जाने के पैरों के चिन्ह थे, पर लौटने के निशान न थे। बंदर ने सोचा–"इस तालाब में ज़रूर मगर-मच्छ होंगे! पानी की खोज में आनेवाले जानवरों को पकड़कर मगर-मच्छ खाते जा रहे हैं। इसलिए मैं पानी के अन्दर क़दम रखे बिना कमल-नालों से पानी पी जाऊँगा।" यों विचारकर बूढ़ा बंदर पानी के स्तर तक की सीढ़ी पर उतर गया, एक लकड़ी से कमलनाल को ऊपर उठाकर पानी पीने लगा।

उस वक़्त एक यक्षी ने पानी के ऊपर अपना सर उठाया। उसके कंठ में एक अद्भुत हीरों की माला थी। उस यक्षी ने बंदर से कहा–"इस तालाब में जो भी क़दम रखते हैं, वे मेरा आहार बन जाते हैं। तुम सब से ज्यादा अक़लमंद मालूम होते हो! इसीलिए तुमने पानी के अंदर

क़दम नहीं रखा। तुमने जैसे पानी पिया, वह तरीका भी बड़ा ही विचित्र और बुद्धिमत्ता से भरा हुआ है। मैं तुम पर प्रसन्न हूँ, तुम कोई वर माँग लो।"

बंदर के मन में कोई अपूर्व विचार आया, उसने पूछा–"तुम एक साथ कितने प्राणियों को खा सकते हो?"

"पानी में क़दम रखने की देर है, मैं एक साथ लाखों प्राणियों को भी खा सकती हूँ। मगर पानी के बाहर आ जाऊँ तो एक सियार की भी तुलना नहीं कर सकती हूँ।" यक्षी ने जवाब दिया।

"तो सुनो, चन्द्र नामक राजा और उसका परिवार मेरे शत्रु हैं। अगर तुम अपने कंठ की माला दोगी तो उसके जरिये राजा और उसके परिवार में प्रलोभन पैदा करके इस तालाब में उन्हें उतार दूँगा। फिर क्या, तुम्हें आहार की कोई कमी नहीं रहेगी!" बंदर ने समझाया।

बंदर की बातें सुनकर यक्षी प्रसन्न हो उठी और अपनी हीरों की माला बंदर के हाथ देकर बोली–"दोस्त! तुम उन सब को किसी भी उपाय से सही, यहाँ पर ले आओ! ऐसा भोजन मैंने आज तक कभी नहीं पाया। तुम यह काम संपन्न करके हमारी दोस्ती को शाश्वत बनाओ।"

इसके बाद बंदर उस माला को लेकर राजमहल के समीप पहुँचा, माला धारण कर इस तरह छलांग मारने लगा जिससे माला पर सब की दृष्टि पड़े। राजकर्मचारी और भटों ने बंदर को देख पूछा–"हे बंदरों का राजा! तुम आज तक कहाँ रहे? तुम्हें यह माला कैसे मिली? ओह, इसकी कांति सूरज की रोशनी की याद दिलाती है!"

"यहाँ से निकट ही कुबेर ने अपनी संपत्ति छिपाने के लिए एक तालाब बनवाया है। इतवार के दिन जो लोग उसमें स्नान करते हैं, उन्हें कुबेर अपने अतिथि मानकर उनके कंठ में ऐसी माला डाल देते हैं।" बंदर बोला।

यह खबर राजा के कानों तक पहुँची। राजा ने बंदर को बुलाकर पूछा–"हे बंदरों के राजा! क्या यह बात सच है? उस तालाब में स्नान करनेवालों को निश्चय ही हीरों की माला मिल जाएगी?"

"महाराजा आप मेरे कंठ की माला देख ही रहे हैं। आप यदि ऐसी मालाएँ चाहते हैं तो मेरे साथ कुछ लोगों को भिजवा दीजिए! मैं उन्हें वह तालाब दिखा देता हूँ!" बंदर ने कहा।

ये बातें सुनने पर राजा के मन में लोभ पैदा हुआ। उसने बंदर से कहा–"मैं किसी को क्यों भेजूँ? मैं ही अगले इतवार को अपने बंधु, मित्र और परिवार के साथ उस तालाब के पास आ जाऊँगा।"

"कुबेर के पास आप जब भी चले जायें, आप को ये रत्नहार मिल जायेंगे। उनके पास रत्नहारों के ढेर लगे हुए हैं।" बन्दर ने राजा को और लोभ दिखाया।

"तब तो हमारा जाना निश्चय है।" यों कहकर राजा यह खुश खबरी अपनी रानियों को सुनाने चला गया।

इतवार का दिन आ पहुँचा। राजा अपनी रानियों, राजकर्मचारियों, दरबारी पशु-चिकित्सक तथा नगर के प्रमुख व्यक्तियों के साथ तालाब की ओर चल पड़ा। बूढ़ा बंदर राजा की गोद में

बैठ गया। दोनों पालकी पर रवाना हुए। दुराशादेवी, तुम्हें प्रणाम! तुम्हारी प्रेरणा से धनवान भी बुद्धिहीन काम कर बैठते हैं! अलंघ्य रेगिस्तानों में प्रवेश करते हैं। सौ स्वर्ण मुद्राओंवाला व्यक्ति एक हजार मुद्राओं की कामना करता है। एक हजारवाला लाख चाहता है। लाखवाला राज्य की कामना करता है। राजा तो सारी दुनिया पर ही अधिकार करना चाहता है। जिसके पास राज्य है, वह स्वर्ग की कामना करता है। बुढ़ापे में बाल सफ़ेद हो जाते हैं, दांत गिर जाते हैं, आँखें दिखाई नहीं देतीं, कान सुनते नहीं, मगर उसकी दुराशा चिर यौवन को लेकर होती है।

तालाब के पास पहुँचने पर बंदर राजा से बोला–"आप सब सूर्योदय तक तालाब में प्रवेश करने के लिए तैयार हो जाइये! वही सही मुहूर्त है। सबको एक साथ पानी में उतरना होगा। सबके लौटने पर आप और हम पानी में उतर जायेंगे। मैं आप को कुबेर के हाथों से रत्नहार दिलाऊँगा।"

सूर्योदय के होते ही राजा और बंदर को छोड़ बाकी सब लोग उत्साह के साथ तालाब में उतर पड़े। पर वे बड़ी देर तक लौटकर न आये, इस पर राजा ने बंदर से पूछा–"ये लोग लौटते क्यों नहीं?"

इस पर बंदर छलांग मारकर एक बरगद पर जा बैठा, तब बोला–"हे दुष्ट राजा! आप के सारे परिवार को इस तालाब में रहनेवाली यक्षी ने खा डाला है। आप ने अपने घोड़ों की पीड़ा को दूर करने के लिए निर्दयतापूर्वक मेरी जाति के सभी लोगों को मरवा डाला। अब उसका बदला लेने की बारी मेरी है। मैंने आपके सभी आत्मीय व्यक्तियों को यक्षी का शिकार बनाकर अपनी व्यथा को दूर किया। अब मेरा बदला हो चुका। आप राजा हैं, इसलिए मैंने आप को प्राणों के साथ छोड़ दिया। आप को ज़िंदगी भर अब इस पीड़ा का अनुभव करना होगा। ईंट का बदला पत्थर से लिया। हत्या का बदला हत्या से लिया। यही हमारे बंदरों का नियम है। हम मानवों का अनुकरण करते हैं। आप ने मेरे वंश का निर्मूल किया, बदले में मैंने आप के वंश का निर्मूल किया।

ये बातें सुन राजा अपार दुख से भर उठा। तब पैदल ही अपने राजमहल की ओर चल पड़ा। राजा के चले जाने पर यक्षी पानी से ऊपर उठी और बंदर से बोली–"बंदर भाई, तुमने बड़ा अच्छा काम किया। अपने शत्रुओं का संहार किया। साथ ही रत्नहार प्राप्त किया, एक मित्र को भी प्राप्त किया।"

इसके बाद बन्दर बड़ी प्रसन्नता के साथ जंगल में चला गया।

भल्लूक मांत्रिक

[१८]

[माया मर्कट ने राजा जितकेतु के नगर पर होनेवाले खतरे की चेतावनी दी। राजा ने जब सुना कि हमला करनेवालों में एक राक्षस भी है, तब राजा ने माया मर्कट को अपना प्रधान मंत्री नियुक्त किया। मंत्री जीवगुप्त ने माया मर्कट पर तलवार का वार करना चाहा, मर्कट ने तलवार खींच ली और जीवगुप्त पर तलवार उठाई; बाद...]

माया मर्कट ने मंत्री जीवगुप्त पर तलवार उठाई, इस पर राजसभा में हाहाकार मच गया। राजा जितकेतु झट से आगे बढ़ा, मर्कट का हाथ पकड़कर उसे रोकते हुए बोला—"हे मर्कटामात्य! जल्दबाजी मत करो। सभाभवन में खून के बहने से राज्य की हानि हो सकती है, मैंने जीवगुप्त को मृत्युदण्ड सुनाया है। उसे अमल करनेवाला व्यक्ति नगर का प्रधान बधिक होता है; यही हमारे राज्य का नियम है।"

राजा के मुंह से ये शब्द सुनते ही माया मर्कट ने अपनी तलवार म्यान में रख ली, तब जीवगुप्त की ओर मुड़कर उससे बोला—"अरे पुराने मंत्री! तुम फिलहाल मृत्यु दण्ड से बच गये हो! इसलिए इसी क्षण तुम इस राज्य को छोड़ चले जाओ!"

समर्थन करना है! तभी सामंत राजा सूर्यभूपति सभा भवन में पहुँचा, राजा जितकेतु को प्रणाम करके बोला–"महाराज! मेरा नाम सूर्यभूपति है! आप इस जीवगुप्त को फिलहाल क्षमा करके छोड़ दीजिएगा! आप के राज्य पर हमला करनेवालों में उदयगिरि का राजा दुर्मुख भी है। इसलिए आप पहले राजधानी की रक्षा का समुचित प्रबंध करवा दीजिए!"

राजा जितकेतु दुर्मुख का नाम सुनते ही चौंक उठा, थोड़ी दूर पर खड़े नगर द्वार के रक्षक दल के सरदार से बोला–"तुम इसी क्षण नगर का द्वार बंद कराकर दुश्मन से उसकी रक्षा करो! हमारे प्रधान सेनापति को मेरा यह आदेश सुनाओ कि वह तत्काल सेनाओं को इकट्ठा करके दुर्ग के बुर्ज और कंदकों की रक्षा का उचित प्रबंध करे।"

"जो आज्ञा, महाराज!" यों कहकर दुर्ग रक्षकों का सरदार वहाँ से चल पड़ा।

इसके बाद राजा जितकेतु ने सामंत सूर्यभूपति से पूछा–"क्या तुम उस दुर्मुख राजा को जानते हो? वह बड़ी भारी सेना लेकर आ रहा है क्या?"

सूर्यभूपति ने चिंतापूर्ण चेहरा बनाकर कहा–"महाराज! मैं बहुत समय तक

जीवगुप्त ने पृथ्वी पर गिरी अपनी तलवार को हाथ में लेकर म्यान में रख दी, राजा तथा मर्कट की ओर एक बार क्रुद्ध दृष्टि दौड़ाकर कहा–"महाराजा का कहना है कि उन्होंने मुझे शिरच्छेद का दण्ड सुनाया है, पर यह मर्कट मुझे देश को छोड़कर चले जाने को कहता है।" फिर दरबारियों की ओर मुड़कर पूछा–"हे नगर के प्रमुख नागरिको! अब आप ही लोग बताइये कि मुझे क्या करना होगा?"

दरबारी सब संकोच में पड़ गये कि राजा के आदेश का समर्थन करना है या नया मंत्री बने मर्कट की बात का

राजा दुर्मुख का सामंत रहा, आखिर उन्हें राज्यशासन करने के लिए असमर्थ मानकर विद्रोह करके उनके राज्य पर अधिकार कर लिया। इस कार्य में दुर्मुख के अनेक सैनिकों ने मुझे सहयोग दिया था, मगर हाल ही में कालीवर्मा नामक एक क्षत्रिय युवक, भल्लूक मांत्रिक, भल्लूक रूप में स्थित एक व्यक्ति, जंगल के डाकू—इन सब दुष्टों ने एक साथ मेरे दुर्ग पर हमला करके मुझे अपने राज्य से भगा दिया है। उस दुर्मुख के समर्थक ये ही सब कमबख्त हैं। वैसे तो दुर्मुख के साथ कोई भारी सेना भी नहीं है।"

सूर्यभूपति की बातें सुन राजा जितकेतु घबरा गया और माया मर्कट से बोला—"मर्कटामात्य! सूर्यभूपति के कथनानुसार दुश्मनों की संख्या भले ही थोड़ी हो, पर वे बड़े ही साहसी और शक्तिशाली मालूम होते हैं! हम दुर्ग के बाहर स्थित नगर की रक्षा की बात फिर सोच लेंगे! पहले हमें इस दुर्ग को बचाने का उपाय सोचना चाहिए!"

माया मर्कट ने ये सारी बातें ध्यान से सुनी, तब उछलकर बोला—"हे राजा! आप दुर्ग की रक्षा के बारे में बिलकुल चिंता न करें! जानते हैं कि वह भल्लूक मांत्रिक और उसके समर्थक सब सूर्यभूपति के दुर्ग में कैसे प्रवेश कर पाये? उनके दुर्ग के द्वारों को जलाकर ही भीतर घुस पाये! इसलिए आप को सर्व प्रथम दुर्ग की रक्षा पर अधिक ध्यान देना है!"

राजा ने स्वीकार सूचक सर हिलाकर सूर्यभूपति से कहा—"सूर्यभूपति! आप ने अपने दुर्ग के द्वारों की रक्षा के बारे में अधिक ध्यान नहीं दिया, इसीलिए आप अपने हाथों से दुर्ग को खो बैठे! इसलिए मैं आप को अपने दुर्ग की रक्षा का भार सौंप देता हूँ। यह जिम्मेदारी आप समर्थता के साथ उठायेंगे तो मैं आप को अपना प्रथम सामंत नियुक्त करूँगा और आप का यथोचित सत्कार भी करूँगा।"

व्यक्ति सभाभवन से बाहर चले गये। सभी लोग जब सभाभवन के प्रांगण में पहुँचे, तब पीछे से माया मर्कट वेग के साथ सीढ़ियों तक पहुँचा, तलवार हाथ में ले अपनी पूँछ को तेज़ी के साथ घुमाते बोला–"मेरे मंत्रदण्ड को किसी ने चुरा लिया है! जो व्यक्ति उसे लाकर मुझे सौंप देगा, उसे महाराजा अपना आधा राज्य सौंप देंगे और उसके साथ अपनी कन्या का भी विवाह करेंगे।"

मर्कट की बातें सुन सभी लोग आश्चर्य चकित हो खड़े ही रह गये! पर मंत्री जीवगुप्त विकट अट्टहास करके बोला–"यह मर्कट यह भी नहीं जानता कि राजा के लिए एक कन्या क्या, बिलकुल संतान तक नहीं है!"
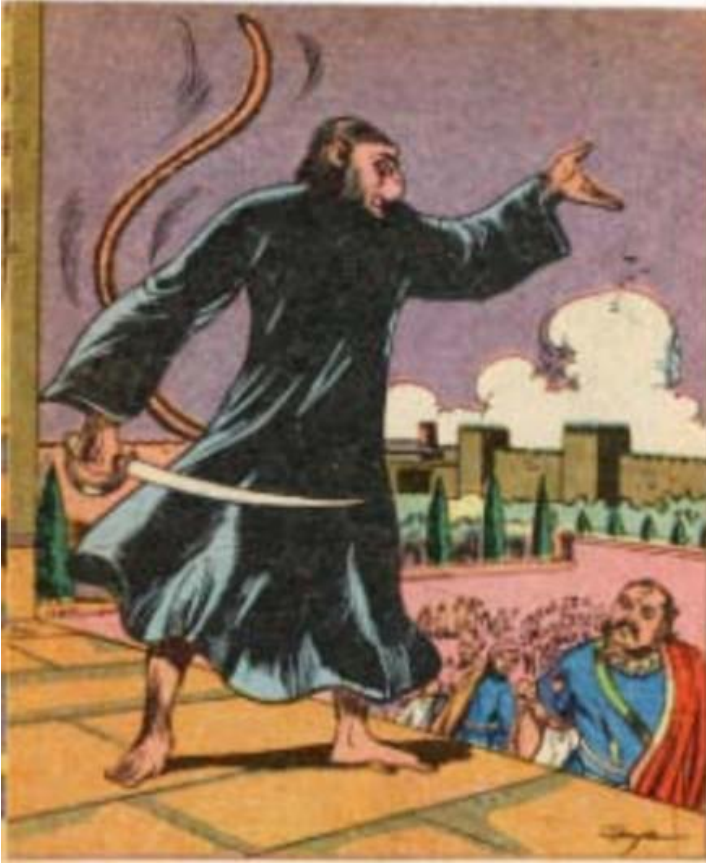
इसके प्रत्युत्तर में सूर्यभूपति बोला–"जो आज्ञा महाराज!" फिर वहाँ से चलने को हुआ, तभी मंत्री जीवगुप्त उच्च स्वर में बोला–"महाराज! बताइये, अब मेरा क्या हाल है? क्या मैं अपने पद से वंचित हूँ या नहीं?"

यह सवाल सुनते ही माया मर्कट किच् किच् करते चिल्ला उठा और बोला–"अजी, पुराने मंत्री, तुम्हारी नौकरी कभी छूट गई है! तुम्हारा सिर थोड़े दिन तक ज़रूर बचा रहेगा! तुम इसी वक़्त इस दरबार से निकल जाओ।"

इसके बाद आगे-आगे सूर्यभूपति और उसके पीछे जीवगुप्त तथा नगर के प्रमुख व्यक्ति सभाभवन से बाहर चले गये।

मंत्री के मुँह से ये बातें सुनते ही सब लोग खिल खिलाकर हँस पड़े! उसी वक़्त वहाँ पर राजा जितकेतु आ पहुँचा। माया मर्कट ने राजा की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देखकर पूछा–"हे राजा! आप भी कैसे राजा हैं? क्या आप के कोई संतान भी नहीं है?"

"मर्कटामात्य! यह बात मैं बाद को बताऊँगा! पहले तुम यह बताओ कि तुम्हारे लिए क्या वह मंत्रदण्ड बहुत ज़रूरी है? क्या उसके भीतर ऐसा महत्व है? उसके

बिना क्या हम शत्रु राजाओं को पराजित नहीं कर सकते?"

"राजन! आप ने यह कैसा सवाल किया? जिसके हाथ में वह मंत्रदण्ड होगा, उसके लिए इस दुनिया में कोई असंभव बात न होगी! वह आप के सिंहासन की ही नहीं, आप के प्राणों की भी रक्षा कर सकता है।" मर्कट ने उत्तर दिया!

उसी क्षण राजा जितकेतु ने हाथ उठाकर कहा—"किसी को इस बात की शंका करने की जरूरत नहीं है कि मेरे कोई कन्या नहीं है। पर मैं एक कन्या को दत्त लेकर ही अपने आधे राज्य के साथ मंत्रदण्ड लानेवाले के साथ उसका विवाह करूंगा।"

ये बातें सुन वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों ने हर्षनाद किये। इसके पूर्व जंगली युवक के पालतू भालू का खेल देखने वहाँ पर काफी लोग जमा हो गये थे। उनमें से दो युवक बैरागियों की पोशाकें धारण किये हुए थे, वे राजा की बातें सुन पागलों की भांति उछल पड़े। उनमें से एक ने अपने झोले में हाथ रखना चाहा, पर दूसरे ने उसे मना करते हुए कहा—"अरे, उप शिष्य! जल्दबाजी न करो! पहले हमें अपने गुरुजी के विचार जान लेना जरूरी है।"

इसके बाद वे दोनों बैरागी युवक वहाँ से चल पड़े। नगर के प्रमुख नागरिकों ने राजा को सलाह दी कि मंत्रदण्ड लानेवाले

युवक को दिये जानेवाले पुरस्कार के संबंध में सारे नगर में ढिंढोरा पिटवाना चाहिए। इसके बाद जब सभी लोग वहाँ से जाने को हुए, तभी एक बाण फुर्ती के साथ दुर्ग की दीवारों के ऊपर से आकर उनके बीच आ गिरा।

भीड़ में से कोई व्यक्ति उस बाण को उठाने को हुआ, तभी माया मर्कट चिल्ला उठा–"रुक जाओ!" तब उसने दौड़कर वह बाण अपने हाथ में लिया, उसकी जाँच करके अपने तेज दाँतों से उसे तोड़कर दूर फेंक दिया, तब बोला–"मैंने इस बाण की जो हालत कर दी, वही हालत अपने दुश्मन की भी करने जा रहा हूँ।" फिर उछल-कूद करते पूछा–"अरे, मेरा मंत्र दण्ड कहाँ पर है?"

इस बीच एक भारी चट्टान झुय् आवाज के साथ दुर्ग की दीवारों के ऊपर से आकर राजमहल की दीवार से टकरा गई। चट्टान के प्रहार से दीवार में भारी दरार पड़ गई।

राजा जितकेतु यह नया संकट देख आपाद मस्तक काँप उठा। फिर विस्मय में आकर कहा–"ऐसी भारी चट्टान को क़िले के बाहर से फेंक सकनेवाला कोई साधारण मानव न होगा! बल्कि कोई राक्षस होगा! मर्कटामात्य! हम मानव क्या ऐसे राक्षसों के साथ लड़ाई करके जिंदा रह सकते हैं?"

चट्टान के गिरते देख नगर के प्रमुख व्यक्तियों के साथ साधारण जनता भी वहाँ से भाग खड़ी हो गई। माया मर्कट राजा को हिम्मत बंधाते हुए बोला–"हे राजा! आप चिंता न करें! ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों में ऐसे महान शक्तिशाली राक्षसों को मेरे गुरु मिथ्यामिश्र ने बंदी बनाकर अपने नौकर बना छोड़ रखा है।"

फिर भी राजा घबराते हुए बोला–"अमात्यवर! तो फिर तुम उन्हें यहाँ पर बुलवा करके मुझे और मेरे राज्य को दुश्मन के खतरे से बचा सकते हो?"

माया मर्कट मुस्कुराकर बोला–"हे राजा, आप भी कैसे भोले हैं! क्या आप यह समझते हैं कि तांत्रिक सौर्वभौम मेरे गुरु आप जैसे छोटे राजाओं को बचाने के लिए उस नदी की घाटी को छोड़ यहाँ पर आ जायेंगे? वे अपने मंत्र तथा तंत्रों की शक्ति के बल पर पहले इस लोक को और बाद ऊपर के लोकों को भी जीतने जा रहे हैं। लेकिन उन्हें भल्लूकपाद नामक एक तुच्छ व्यक्ति रोक रहा है। उसी का शिष्य इस वक़्त दुर्ग के बाहर आया हुआ भल्लूक मांत्रिक है।"

मर्कट के मुँह से ये शब्द सुनते ही राजा जितकेतु के मन में यह संदेह पैदा हुआ। वह यह कि कोई दो मांत्रिक किन्हीं अपूर्व शक्तियों को पाने के लिए उसके जैसे लोगों को पांसों के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि इस माया मर्कट को मेरे सिंहासन की रक्षा करने की अपेक्षा अपने शत्रु भल्लूक मांत्रिक का संहार करना अत्यावश्यक कार्य प्रतीत होता है। इसलिए दुर्ग की रक्षा की जिम्मेदारी उसे स्वयं अपने ऊपर लेना ज्यादा उपयुक्त होगा।

यों विचार कर राजा ने मर्कट से कहा– "मर्कटामात्य! दुर्ग की दीवारों पर पहुँच कर सबसे पहले हमें यह देखना चाहिए कि हमारा शत्रु दुर्ग से कितनी दूरी पर है! हमारे सैनिकों को भी सावधान रहने के लिए हमें चेतावनी देनी है।" यों
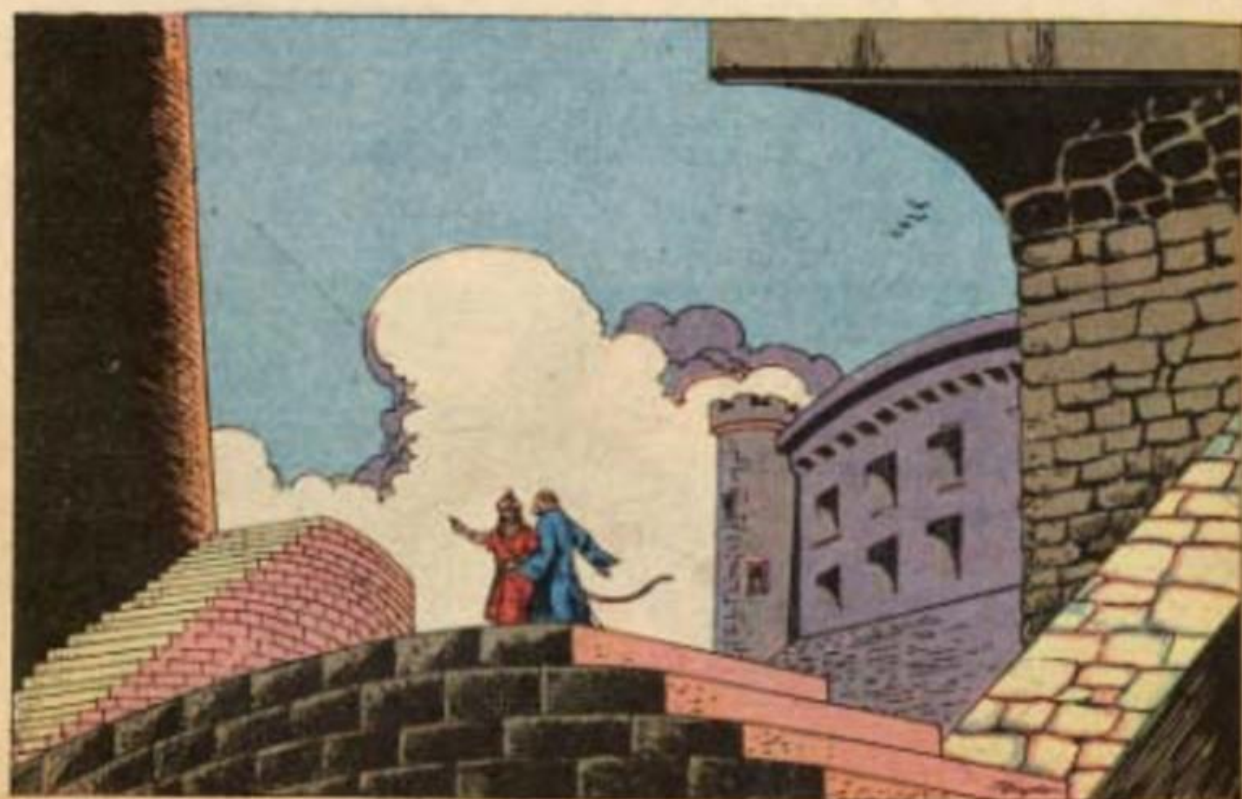
समझाकर वह निकट के बुर्ज की ओर चल पड़ा।

माया मर्कट "ओह! मेरा मंत्र दण्ड कहाँ?" चिल्लाते राजा का अनुसरण करने लगा।

इसके बाद राजा जितकेतु और माया मर्कट ने दुर्ग की दीवारों पर से उसके सामने के मैदान की ओर देखा। दुर्ग के नीचे एक घोड़े पर कालीवर्मा, भैंसे पर भल्लूक मांत्रिक, हाथी पर बधिक भल्लूक, राक्षस उग्रदण्ड तथा थोड़े सैनिक भी उन्हें दिखाई दिये।

उन्हें देखते ही राजा जितकेतु आपाद मस्तक कांप उठा और बोला–"हे अमात्य! और लोगों की बात तो मैं अभी कुछ नहीं कह सकता, लेकिन उस राक्षस को देखने पर सचमुच मेरा कलेजा कांप रहा है। क्या उसे जीतना मानव मात्र के लिए संभव होगा?"

"बुजुर्गों ने बताया है कि जो मानव मात्र द्वारा संभव नहीं है, वह मंत्र साध्य है। किंतु जो मंत्र साध्य भी नहीं है, वह तंत्र साध्य है; इसे पंडितों ने बताया है। बाप रे बाप! मेरा मंत्र दण्ड कहाँ?" यों किचकिच करते माया मर्कट उछल-कूद करने लगा।

मर्कट की आवाज सुनकर जंगली युवक हाथी पर उठ खड़ा हुआ, उसकी ओर बाण का निशाना बनाकर बोला–"अरे कमबख्त बंदर! लो, देखो, तुम्हारा मंत्र दण्ड बाण के रूप में चला आ रहा है।" इन शब्दों के साथ उसने बाण छोड़ दिया। बाण सर्र की आवाज करते आकर मर्कट के घुटने पर जा लगा।

बाण की चोट खाकर माया मर्कट औंधे मुँह गिर पड़ा, "तांत्रिक गुरु!" पुकारते झट उठ खड़ा हो गया, बाण को अपने दोनों हाथों से मरोड़कर खींच लिया, तब कहा–"अरे, इस भ्रांतिमति को तुम्हारे बाण क्या बिगाड़ सकते हैं?" फिर उस बाण को कालीवर्मा तथा भल्लूक मांत्रिक की ओर फेंक दिया।

(और है)
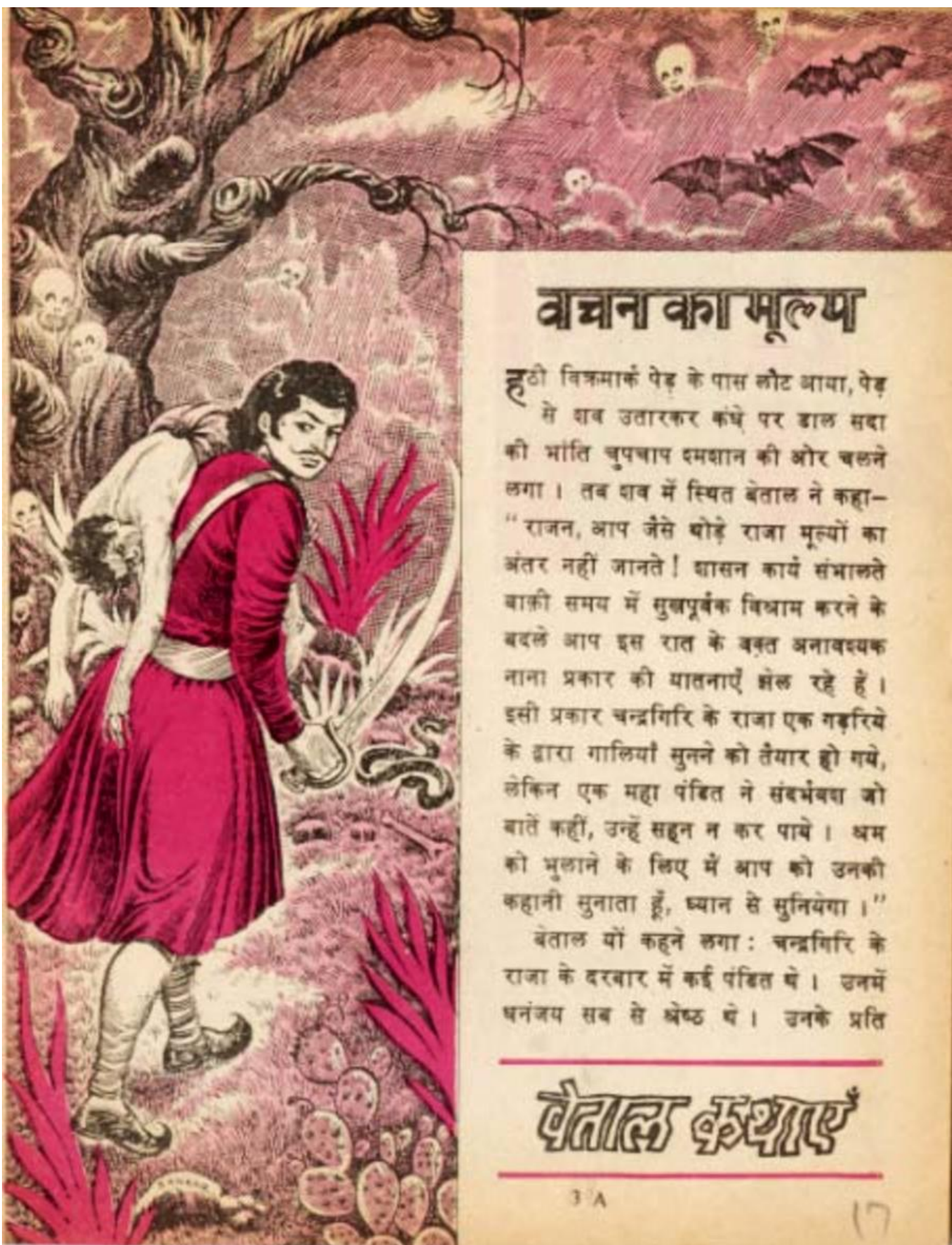
वचन का मूल्य

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा— "राजन, आप जैसे थोड़े राजा मूल्यों का अंतर नहीं जानते! शासन कार्य संभालते बाक़ी समय में सुखपूर्वक विश्राम करने के बदले आप इस रात के वक़्त अनावश्यक नाना प्रकार की यातनाएँ झेल रहे हैं। इसी प्रकार चन्द्रगिरि के राजा एक गड़रिये के द्वारा गालियाँ सुनने को तैयार हो गये, लेकिन एक महा पंडित ने संदर्भवश जो बातें कहीं, उन्हें सहन न कर पाये। श्रम को भुलाने के लिए मैं आप को उनकी कहानी सुनाता हूँ, ध्यान से सुनियेगा।"

बेताल यों कहने लगा: चन्द्रगिरि के राजा के दरबार में कई पंडित थे। उनमें धनंजय सब से श्रेष्ठ थे। उनके प्रति

वेताल कथाएँ
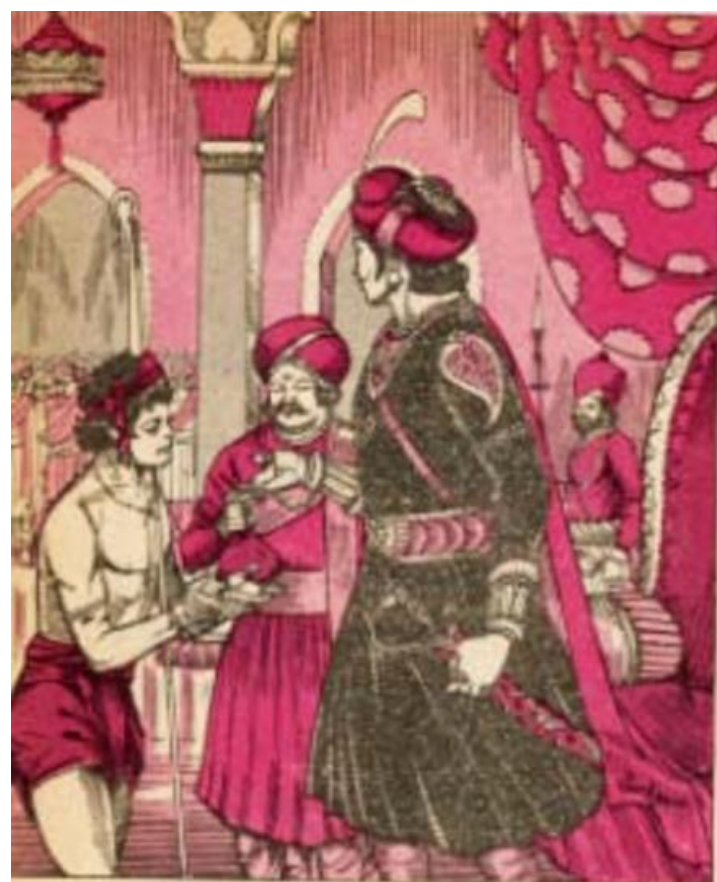
राजा का अपार आदर था। इस कारण धनंजय में थोड़ा अभिमान आ गया था।

राजा समय-समय पर अपना वेष बदलकर देशाटन किया करते थे। एक बार इसी सिलसिले में राजा को एक खतरे का सामना करना पड़ा, तब एक गड़रिये ने राजा की रक्षा की। राजधानी में लौटते ही राजा ने अपने दूतों के द्वारा गड़रिये को राजधानी में बुला भेजा।

राजदरबार में क़दम रखते ही गड़रिये को लगा कि उसका दिमाग चकरा रहा है, मगर राजा सिंहासन पर से उतर आये और बोले–"भाई, तुम्हें याद है? तुमने मेरी जान बचाई, डरो मत, तुम्हारा सम्मान करने के लिए ही मैंने तुम को दरबार में बुला भेजा है।" ये शब्द सुनने पर गड़रिये ने राजा को पहचान लिया। उसने आश्चर्य में आकर पूछा–"क्या बोले? आप राजा हैं! जब आप अपनी रक्षा नहीं कर पाते, ऐसे व्यक्ति आप सिंहासन पर बैठकर हम पर हुकूमत करते हैं?"

दरबारी यह सोचकर डर गये कि गड़रिये की बातें सुन राजा नाराज़ होकर न मालूम उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे?

पर राजा शांत स्वर में बोले–"तुम्हारा संदेह बिलकुल ठीक है। कभी कभी परिस्थितियाँ अनुकूल न होने पर बड़े से बड़े शक्तिशाली भी दुर्बल बन जाते हैं। लेकिन इस देश के राजा को बचाने का मौक़ा तुम्हें मिला।" यों कहकर राजा ने उसे एक हज़ार सोने के सिक्के पुरस्कार में दिलाये।

एक साथ इतना सारा सोना देख वह अवाक् रह गया। सकुचाते हुए सोना लेकर गड़रिया बोला–"इस बार देहातों का भ्रमण करते वक़्त आप सावधानी बरतियेगा। मैं तो अपने काम में लगा रहता हूँ, जब चाहे तब आप की रक्षा करने के लिए मेरे पास फ़ुरसत न होगी।"

ये बातें सुन राजा खिलखिलाकर हँस पड़े। पर इस बात का महत्व धनंजय

समझ न पाया, लेकिन ऐसे असभ्य व जंगली ने भरी सभा में राजा का अनादर किया, इसे राजा कैसे सहन कर पाये? ऐसे व्यक्ति जो उसका सम्मान करते हैं, उसका मूल्य ही क्या है?

धनंजय यह जानने के लिए तड़प उठा कि गड़रिये के प्रति राजा के मन में जो आदर का भाव है, वह उसके प्रति भी है या नहीं? एक बार सभा में जब किसी बात पर चर्चा हो रही थी, तब धनंजय को अपनी शंका का निवारण करने का मौक़ा मिला। राजा ने अपनी कोई शंका प्रकट की, तब धनंजय बोल उठा–"प्रभू! परम मूर्ख के मन में भी न उठनेवाला यह संदेह आप के मन में कैसे पैदा हुआ?"

ये शब्द सुनने पर राजा की आँखें क्रोध के मारे लाल हो उठीं, दूसरे ही क्षण राजा दरबार स्थगित करके उठकर चले गये।

दूसरे ही दिन धनंजय को दरबारी पंडित के पद से हटाया गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, चन्द्रगिरि के राजा के इस व्यवहार का क्या कोई मतलब भी है? गड़रिये ने जब भरी सभा में स्पष्ट रूप से उनका अपमान किया, तब राजा नाराज न हुए, बल्कि खुश हो गये थे, ऐसी हालत में राजा का आदर प्राप्त श्रेष्ठ दरबारी पंडित धनंजय ने संदर्भवश जो निंदा की, उस पर वे क्यों नाराज हो गये? इसका

समाधान जानते हुए भी न देंगे तो आप का सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा ।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "राजा के इस व्यवहार का समर्थन कई प्रकार से किया जा सकता है। प्रथम तो यह है कि प्राण बचानेवाला व्यक्ति पिता के समान होता है। उसे डांटने का अधिकार भी होता है। गड़रिये ने राजा को डांटा, पर उसने अपने मन में यह नहीं सोचा कि वह राजा का अपमान कर रहा है। उल्टे उसकी बातों में व्यंग्य है, हास्य है। सभी दरबारियों में राजा के साथ मजाक करने का अधिकार केवल मजाकिये को होता है। इस रूप में भी गड़रिये का व्यवहार समर्थन के लायक है। तीसरी बात, राजदरबार में पहुँचते ही गड़रिये का दिमाग चकरा गया था, वह नहीं जानता था कि उस हालत में उसे कैसा व्यवहार करना है! जहाँ तक हो सके, उसने स्वाभाविक रूप में व्यवहार करने का प्रयत्न किया। मगर उसका यह सहज व्यवहार थोड़ा जंगलीपन को जरूर लिये हुए था। उसने अपना सम्मान करने की कामना व्यक्त नहीं की। राजा का भी यह सोचना अनुचित होगा कि उन्होंने गड़रिये का सम्मान किया है; इसलिए गड़रिया उनके प्रति एक सभ्य व्यक्ति जैसा व्यवहार करे। अब आखिरी बात यह है कि कोई भी गड़रिये की बात का कोई मूल्य नहीं देगा। उसके वचनों के द्वारा राजा के संबंध में दरबारियों के विचार भी नहीं बदल सकते। उनमें से कुछ लोग गड़रिये पर नाराज भी हो उठे थे। मगर दरबारी पंडित के वचन का मूल्य सब कोई देते हैं, संदर्भवश ही सही, धनंजय ने राजा का अपमान किया। यदि राजा इसे सहन कर ले तो दूसरे दिन से दरबारियों में राजा के प्रति कोई आदर का भाव न होगा! इस कारण राजा के द्वारा धनंजय को दरबारी पंडित के पद से हटाना सर्वथा न्याय संगत है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

विचित्र नियम

प्राचीनकाल में सिंधु देश पर राजा जयसिंह शासन करते थे। एक दिन एक संगीत का विद्वान दरबार में पहुँचा और अपने को दरबारी पंडित के पद पर नियुक्त करने की मांग की।

इस पर राजा जयसिंह ने कहा–"हमारे यहाँ कई दरबारी संगीत के विद्वान हैं। इसलिए नये लोगों को फिलहाल हम नियुक्त करना नहीं चाहते।"

विद्वान उस दिन तो चला गया, पर दूसरे दिन दरबार में पहुँच कर कहा–"मैं संगीत का एक विद्वान हूँ। आपके दरबार में प्रवेश चाहता हूँ।" राजा ने पुनः वही उत्तर दिया:

"हमारे दरबार में इस समय संगीत के विद्वानों की जरूरत नहीं है, इसलिए हम किसी और विद्वान को नियुक्त करना नहीं चाहते हैं; आप जा सकते हैं।"

लेकिन वह विद्वान प्रति दिन दरबार में पहुँच जाता और राजा के सामने अपनी इच्छा प्रकट करता, राजा उसकी इच्छा का तिरस्कार करते।

यों कई दिन बीत गये। तब राजा को अपना व्यवहार अपने लिए ही अपमानजनक प्रतीत हुआ। वह विद्वान राजा के दरबारी संगीतज्ञ बनने की कामना से बड़ी सहनशीलता के साथ मांग करता है, राजा मानो अपना आधा राज्य खोने का सा व्यवहार करते उसकी इच्छा का तिरस्कार करते रहे, यह व्यवहार राजा को ही आखिर बहुत बुरा लगा।

इसलिए जब एक दिन उस विद्वान ने अपनी इच्छा प्रकट की तब राजा जयसिंह ने कहा–"आप बार बार अनुरोध करते हैं, इसलिए आप अपना संगीत हमारे विद्वानों को सुनाइये। अगर ये लोग

शकुंतला भटनागर

सम्मति दे तो हम आपको अपने दरबारी संगीत विद्वान के पद पर नियुक्त करेंगे।"

इस पर विद्वान ने कहा–"महाराज, मेरा एक नियम है। जब मेरी इच्छा होगी, तभी मैं अपना संगीत सुनाऊँगा। किसी की मांग पर मैं अपनी विद्या का प्रदर्शन नहीं करता। यह शर्त यदि आपको स्वीकार है, तो आप मुझे अपने दरबार में स्थान दीजिए।"

ये बातें सुनने पर राजा को क्रोध आया। उन्होंने कठोर स्वर में कहा–"ऐसे विचित्र नियम रखनेवाले विद्वान को मेरे दरबार में कोई स्थान नहीं है।"

उसी वक़्त वह विद्वान चला गया, लेकिन दूसरे दिन फिर दरबार में आ धमका। राजा ने इस बार भी उसे वह पद देने से साफ़ इनकार किया।

इस प्रकार थोड़े दिन और गुजर गये।

एक दिन अचानक राजा जयसिंह के मन में एक विचार आया। वह यह कि उस विद्वान के मन में कोई विचार होगा। चाहे तो उससे सदा के लिए पिंड छुड़ाया जा सकता है, पर ऐसा करने से उसके मन की बात को समझना संभव न होगा।

यों विचार करके एक दिन राजा जयसिंह ने सभी दरबारियों को चकित बनाते हुए यह घोषणा की–"आज से आप हमारे दरबारी विद्वान हैं। आपके वास्ते उचित वेतन, निवास और अन्य सुविधाओं का प्रबंध किया जाएगा।"

राजा का यह निर्णय सुनकर सब लोग आश्चर्य में आ गये, लेकिन उस विद्वान को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। वह उसी दिन दरबार में अपने पद पर आ गया।

राजा की यह नियुक्ति किसी को पसंद न आई, लेकिन यह सोचकर सब लोग चुप रह गये कि शायद यह विद्वान कोई असाधारण प्रतिभा रखते हैं। लेकिन कई महीने बीत गये, पर विद्वान ने एक भी दिन अपने संगीत का परिचय न दिया।

कुछ दिन बाद राजा के एक पुत्र हुआ। वही उस राज्य का वारिस था। सारे देश में उत्सव मनाया गया। राजमहल दस दिन तक नृत्य, संगीत आदि मनोरंजन के कार्यक्रमों से गूँजता रहा। दरबारी संगीतज्ञों और अन्य विद्वानों ने भी अपना संगीत सुनाया, पर नये विद्वान ने अपना गीत नहीं सुनाया। राजा का दिल कचोट उठा। इतने सारे मनोरंजनों के बीच अगर इस विद्वान के दिल में गाने की इच्छा न जगी तो फिर कब जगेगी? राजा ने अन्य विद्वानों के द्वारा पुछवाया कि तुम भी अपने गीत क्यों नहीं सुनाते? पर उस विद्वान ने कोई जवाब नहीं दिया। मंत्री ने उसके निकट जाकर इसका कारण पूछा तो उसने बस यही जवाब दिया— "अभी नहीं, जब उचित समय आएगा, तब बिना किसी के पूछे मैं खुद गाऊँगा।"

कई बार राजा ने उस विद्वान को दरबारी संगीत विद्वान के पद से हटाने का

संकल्प किया, पर बात वहीं की रह गई। राजा ने यह सोचकर अपनी जबान पर काबू रख लिया कि विद्वान के इस व्यवहार के पीछे कोई रहस्य छिपा है। उसे जरूर जान लेना चाहिए। पाँच साल बीत गये।

अचानक राजकुमार एक विषैले ज्वर का शिकार हो गया। कई वैद्यों ने इलाज किया, पर बीमारी घटने के बजाय बढ़ती ही गई। सब ने राजकुमार के बचने की आशा छोड़ दी। राजकुमार के प्राण किसी भी क्षण निकलनेवाले थे। सब ने राजकुमार की मृत्यु शय्या को घेर लिया।

ठीक उसी वक्त संगीत विद्वान अपनी वीणा लेकर आ पहुँचा और थोड़ी दूर पर बैठकर गाने लगा।

"छी: छी: आखिर यह गाने भी लगा तो इस बेहूदे वक्त?... राजकुमार के जन्म दिन के समय गाया नहीं, अब उसके आखिरी क्षणों में उसे अपना गीत आलाप कर सुना रहा है।" यों कहते सब ने गुप्त रूप से उसकी कड़ी आलोचना की।

मगर उस विद्वान का गीत सब के दिलों पर नशीली दवा जैसे छाने लगा। वे लोग राजकुमार की बीमारी और उसकी आनेवाली मौत को भूलते जा रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे लोग आखिर कहाँ पर हैं? राजा जयसिंह ने नींद से जागे हुए व्यक्ति जैसे अपने बेटे की ओर देखा। मृत्यु शय्या खाली पड़ी थी। राजा ने विकल होकर चारों ओर अपनी नजर दौड़ाई।

आश्चर्य की बात थी! राजकुमार सब के साथ बैठकर संगीत सुन रहा था।

अचानक संगीत बंद हो गया। विद्वान अपनी वीणा लेकर बाहर चला गया।

राजकुमार को जीवित देख सभी लोग उसी की ओर ताक रहे थे, पर किसी ने उस विद्वान के बारे में सोचा तक नहीं।

इसके बाद राजा ने उस विद्वान को बड़ा जागीर देकर उसका सम्मान करना चाहा, लेकिन उस विद्वान का कहीं पता न चला।

परिवर्तन

अवंती राज्य में विनोद नामक एक युवक राजदरबार के एक छोटे कर्मचारी के पद पर नियुक्त हुआ। उसका पिता राजदरबार में नौकरी करते मर गया था, इसलिए विनोद को वह नौकरी प्राप्त हुई। कई दिन तक विनोद ने शादी नहीं की। इसका कारण यह था कि वह बड़ी नौकरी पाकर अपनी होनेवाली पत्नी की दृष्टि में बड़ा आदमी कहलाना चाहता था।

मगर बराबर अपनी माँ के जोर देने पर विनोद ने आखिर शादी करने को मान लिया। एक गरीब किसान की बेटी चन्द्रा उसकी पत्नी बनी। वह खूबसूरत और सुशीला भी थी। वह किफ़ायत तो रखती थी, साथ ही दूसरों की खातिर करना भी अच्छी तरह से जानती थी। वह अपने पति और सास के साथ विनयपूर्ण व्यवहार भी करती थी।

पर विनोद अपनी पत्नी की नजर में ऊँचा व्यक्ति कहलाने के ख्याल से आँख मूँदकर खर्च कर देता था। पैसे पानी की तरह बहाकर कर्जदार बना।

चन्द्रा अपने पति की कमाई से भली भांति परिचित थी। लेकिन वह कभी अपने पति को इस बात की याद दिलाती न थी कि हम संपन्न नहीं हैं, लेकिन अनावश्यक खर्च कम करने की बराबर सलाह देती रही।

विनोद किफ़ायत करना अपने लिए अपमान की बात मानता था। इसलिए वह अपनी पत्नी से कहा करता था–"हमें ऐसी कंजूसी दिखाने की क्या जरूरत है? अपने ओहदे के अनुकूल हमें खर्च करना ही होगा।"

जब कर्जदार बराबर उसे कर्ज चुकाने का तकाजा देने लगे, तब उसने एक अच्छी

अनुराधा कश्यप

नौकरी पाने की बड़ी कोशिश की, लेकिन उसकी कोशिश बेकार गई।

एक बार विनोद का मामा अपनी बहन व भानजे को देखने आया। वह राज दरबार में बड़े पद पर थे। विनोद ने सोचा कि अगर वे चाहे तो उसे अच्छी नौकरी दिला सकते हैं, इस ख्याल से उसने उनके सामने अपनी समस्या रखी।

विनोद के मुँह से ये बातें सुन उसके मामा आश्चर्य में आ गये। क्योंकि विनोद उस वक्त जो नौकरी कर रहा था, वह कोई खराब न थी। उसकी योग्यताओं से कहीं ऊँची थी। अलावा इसके विनोद की आमदनी उसके परिवार के खर्च के लिए पर्याप्त थी। चाहे तो वह उसमें से थोड़ा-बहुत बचा भी सकता था। साथ ही वह अपनी नौकरी में दक्षता दिखावे तो वह ऊँचे पद पर भी जा सकता था।

इन सब बातों की जानकारी रखनेवाले विनोद के मामा अपने भानजे की इस बेवकूफी पर रहम खाकर बोले-"देखो विनोद! तुम्हें सब से पहले अपनी नौकरी के प्रति विश्वास और आदर होना चाहिए। तभी तुम उस नौकरी में चमक सकते हो! ऊँचे अधिकारी अगर तुम्हारी प्रतिभा को पहचान ले तो तुम्हारा भला होगा। इसलिए तुम अपनी आमदनी से संतुष्ट होना सीख लो।"

विनोद को अपने मामा की ये बातें अच्छी न लगीं। उसके मन में यह गलत-फ़हमी हो गई कि उसके मामा मदद देने से बचने के लिए यों बहाना बना रहे हैं। विनोद के मन की यह बात उसके मामा ने भी भांप ली। उन्होंने विनोद से पूछा-"सुनो बेटा, यह बताओ, किस तरह की नौकरी तुम करना चाहते हो?"

विनोद को लगा कि उसके भीतर नई स्फूर्ति आ गई है। उसने कहा-"अगर मुझे कोशाध्यक्ष या मण्डल के अधिकारी का पद मिल जाय तो ओहदे के साथ अच्छी आमदनी भी हाथ लग सकती है।"

अपने भानजे की यह महत्वाकांक्षा देख उन्हें हँसी के साथ के साथ क्रोध भी आया, वे बोले–"अच्छी बात है! कोशाध्यक्ष मेरे परिचित हैं। कल तुम मेरे साथ चलो, मैं उनके द्वारा तुम्हें अच्छी नौकरी दिलाने की कोशिश करूँगा।"

दूसरे दिन विनोद अपने मामा के साथ राजधानी के लिए चल पड़ा। दोनों कोशाध्यक्ष के घर पहुँचे। कोशाध्यक्ष से एकांत में बात करने के बाद मामा ने उनके साथ विनोद का परिचय कराया।

कोशाध्य ने विनोद को एड़ी से चोटी तक परख कर देखा, उसकी नौकरी का हाल जान लिया, तब वे बोले–"तुम्हारा विचार वाकई अच्छा है, लेकिन जैसे तुम समझते हो, वैसे यह कोशाध्यक्ष-पद सुखदायक नहीं है। यह तो तलवार की धार पर चलने के बराबर का है। इसमें धन के साथ संबंध है, इसमें थोड़ा भी अंतर आ गया तो दण्ड भोगना पड़ेगा। इस पद को संभालने के लिए बुद्धिमत्ता के साथ साहस और अनुभव की भी ज़रूरत है।"

पर विनोद को ये बातें अच्छी न लगीं।

कोशाध्यक्ष ने आगे यों बताया–"कोशाध्यक्ष का यह पद मुझे अचानक एक ही साथ नहीं मिला। इस पद पर आने के पहले मैंने दरबार में घंटी बजाई, बाद को द्वारपाल बना, फिर दुर्ग के पहरेदारों में से एक नियुक्त हुआ। इसके बाद कोशागार का रक्षक बना, राजा ने

कई बार मेरी कठिन परीक्षाएँ लीं, उनमें सफल होने के बाद ही उन्होंने मुझे यह पद दे दिया है। कई सीढ़ियाँ पार किये बिना क्या हम ऊपरी मंजिल पर पहुँच सकते हैं?"

विनोद को ये सारी बातें अनावश्यक लगीं। उसके चेहरे के बदलते रंग को मामा देख रहे थे। तब कोशाध्यक्ष से विदा लेकर दोनों चल पड़े।

रास्ते में मामा ने विनोद को समझाया– "बेटा, उनकी बातों पर तुम ध्यान न दो। मण्डल के अधिकारी भी मेरे दोस्त हैं। क्या हम उनसे भी मिल लें?"

ये बातें सुनने पर विनोद के मन में फिर से आशा जगी। थोड़ी दूर जाने पर रास्ते में उन्हें दस युवक मिले। विनोद के मामा ने उन्हें रोककर पूछा– "बेटे, तुम लोग कहाँ जा रहे हो?"

उनमें से एक ने जवाब दिया–"हम लोग बेकार शिक्षित व्यक्ति हैं। हमारी अक्लमंदी और शिक्षा हमारे पेट भरने का साधन न बनी। राजधानी में भी हमारी शिक्षा को जब मान्यता न मिली तो हम वहाँ क्यों रहें? इसलिए देहातों में जाकर हम लोग खेतीबाड़ी करके अपने पेट भरना चाहते हैं!"

यों बताकर वे लोग आगे बढ़ गये। ये बातें सुनने पर विनोद के मन में अचानक कोई परिवर्तन हुआ। उसके सारे भ्रम एक साथ दूर हो गये।

विनोद के मामा बोले–"देखो बेटा, मण्डल के अधिकारी का घर समीप आ गया है, चलो, हम उनसे मिल लेंगे।"

"मामाजी, अब किसी से मिलने की ज़रूरत नहीं है! मेरी यह जो नौकरी है, इसी से मैं संतुष्ट हूँ! अपनी शक्ति भर मेहनत करके ईमानदारी के साथ मैं ऊँचे पद पाने की कोशिश करूँगा। मैंने नाहक़ आप को कष्ट दिया, मुझे माफ़ कर दीजिएगा।" विनोद ने कहा।

विनोद की ये बातें सुन मामा मन ही मन हँस पड़े।

दानवों के गुरु शुक्र भृगु के पुत्र थे। शुक्र ने बृहस्पति के पिता अंगीरस के पास विद्याभ्यास किया। अंगीरस ने पक्षपात दिखाया, इस कारण शुक्र अंगीरस को छोड़ गौतम के पास पहुँचे।

गौतम ने किसी कारण से शुक्र को शिक्षा नहीं दी, पर समझाया कि अगर वह शिवजी के आश्रय में जाय तो उसे सारी विद्याएँ प्राप्त होंगी। शुक्र ने शिवजी को प्रसन्न किया। शिवजी ने प्रत्यक्ष होकर उन्हें "मृतसंजीवनी" विद्या सिखाई।

इसके बाद शुक्र दानवों के गुरु बने। देव और दानवों के युद्धों में मरे हुए दानवों को अपनी मृतसंजीवनी विद्या के द्वारा जिलाते रहे। इससे देवताओं को बड़ी असुविधा हुई। खासकर देवताओं को अंधकासुर नामक राक्षस का वध करना नामुमकिन हो गया। अंधकासुर पहले से ही ब्रह्मचारी था और उन्मत्त था। वह सभी सुंदर नारियों को बन्दी बनाता था। एक बार वह पार्वती पर ही मोहित हो गया। यदि उसका वध करना चाहे तो सब से बड़ी अड़चन थी शुक्र की मृतसंजीवनी विद्या!

इस कारण शिवजी ने तात्कालिक रूप से शुक्र को निगल डाला और अंधकासुर का वध किया। इसके बाद शुक्र शिवजी के भीतर से बाहर आये।

शुक्र की मृतसंजीवनी विद्या देवताओं के लिए कुछ और उलझनों का कारण बनी। शुक्र की सहायता दानवों को प्राप्त न हो, इस वास्ते इन्द्र ने अपनी पुत्री जयंती को शुक्र के पास भेजा। शुक्र जयंती के मोहजाल में फँसकर दानवों से दूर चला गया। दानव शुक्र की खोज कर रहे थे, इस बीच बृहस्पति शुक्र के रूप

में दानवों के बीच पहुँचे और उनके रहस्यों का पता लगाते हुए उन्हें नुकसान पहुँचानेवाली सलाहें देने लगे। इस बीच शुक्र लौट आये। अब दानव समझ न पाये कि उनमें असली शुक्र कौन हैं?

मृतसंजीवनी के वास्ते देवताओं की ओर से कच शुक्र के पास पहुँचा, शुक्र की शुश्रूषा की। शुक्र की पुत्री देवयानी ने कच के साथ प्यार किया, इस पर दानवों ने कई बार कच को मार डाला, शुक्र अपनी पुत्री देवयानी के अनुरोध पर बराबर कच को जिलाते रहें। पर कई लोग नहीं जानते कि उन्हीं दिनों में मध्यनिषेध अमल करने का कारण कच है। क्योंकि जब हर बार मृत्यु को प्राप्त कच को शुक्र बचाते रहें, तब दानवों ने कच को जलाकर भस्म कर डाला और उस भस्म को ताड़ी में मिलाकर शुक्र के द्वारा पिलाया। पर जब शुक्र ने कच को बचाया, तब तक वह शुक्र के पेट में था। लेकिन शुक्र के मरे बिना कच बाहर नहीं आ सकता था। इसलिए शुक्र ने कच को मृतसंजीवनी विद्या का उपदेश किया। उसके बाहर आने के बाद कच की मदद से शुक्र को जीवित होना पड़ा। इस घटना के बाद शुक्र ने मध्यपान को महान पाप मानकर उसका निषेध किया।

लोग शुक्राचार्य को 'काना' कहते हैं! इसका कारण यह है कि वामन ने बलि चक्रवर्ती से जब तीन क़दमों की जमीन माँगी, तब बलि ने जमीन दान देने के लिए जल कलश को ऊपर उठाया, तब जल की धारा को रोकने शुक्र ने एक दाभ लेकर कलश के चोंगे में धारा को बाहर निकालने के लिए घुसेड़ दिया; फलतः शुक्र की एक आँख में दाभ चुभ गया और वे काना बन गये।

पुराणों में शुक्र का महत्व चाहे जो हो, पर आकाश में दिखाई देनेवाले सभी ग्रहों में शुक्र ग्रह ज्यादा प्रकाशमान है। गुरु ग्रह भी उसके सामने फीका लगता है।

आदर्श शिष्य

प्राचीन काल में एक जंगल में धौम्य नामक एक मुनि का आश्रम था। उस आश्रम में उनके शिष्य अपने अध्ययन के साथ गुरु की सेवा भी किया करते थे।

धौम्य के शिष्यों में उपमन्यु एक था, जो गुरु के पशुओं को चराया करता था। मवेशियों को चारागाह में हांक ले जाता और शाम तक उन्हें आश्रम को लौटा लाता था।

एक दिन धौम्य ने उपमन्यु से पूछा— "तुम क्या खाते हो?" उपमन्यु ने उत्तर दिया कि पशु जब चरने लगते हैं, तब वह समीप के गाँव में भीख माँग लाकर खाता है। गुरु ने फिर पूछा—"तुम मेरी अनुमति के बिना कैसे खाते हो?"
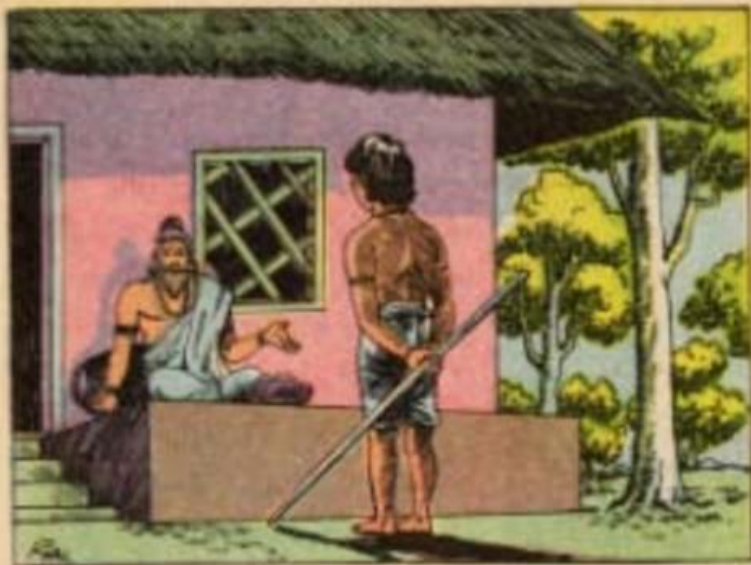
दूसरे दिन उपमन्यु जो भीख माँग लाया, उसे उसने अपने गुरु को दी। उसने सोचा कि उसमें से थोड़ा अंश गुरु उसे भी देंगे। पर ऐसा न हुआ, फिर भी उपमन्यु रोज भिक्षा लाकर गुरु को देता ही गया।

इसके बाद उपमन्यु गायों के दूध दुहकर पीता रहा। यह बात जब गुरु को मालूम हुई, तब उन्होंने आदेश दिया कि आश्रम के अन्दर गायों का दूध दुहने के बाद जो कुछ बचता है, वह दूध बछड़ों के हिस्से का है।

बछड़े जब गायों के पास दूध-पीते थे, तब उनके मुँह पर जो फेन रह जाता था, उपमन्यु उसे लेता रहा। पर गुरु ने इसे भी मना कर दिया। क्योंकि बछड़े उपमन्यु के प्रति प्रेम के कारण ज्यादा फेन छोड़ सकते थे।

आखिर भूख की पीड़ा से परेशान हो उपमन्यु पत्ते खाने लगा। पर किसी पत्ते का रस आँख में गिरने के कारण उपमन्यु अंधा हो गया और वह टटोलते आश्रम की ओर चल पड़ा।

रास्ते में उपमन्यु किसी घाटी में गिर पड़ा। लेकिन कमजोरी की वजह से वह ऊपर चढ़ न पाया। साथ ही वह मदद के लिए किसी को भी पुकार न पाया. इस बीच अंधेरा फैल गया।

गायें आश्रम को लौट आईं। पर उपमन्यु का कहीं पता न था। गुरु ने सोचा कि उपमन्यु किसी खतरे में फंस गया है, इसलिए धौम्य उपमन्यु की खोज में चल पड़े।

गुरु एक घाटी में गिरे अपने शिष्य के पास पहुँचे, उन्होंने सारी हालत समझ ली। तब उन्होंने अपने शिष्य को सलाह दी कि वह देवताओं के वैद्य अश्विनियों से प्रार्थना करे।

उपमन्यु ने ऐसा ही किया। अश्विनी देवता प्रत्यक्ष हुए। एक रोटी उसके हाथ देकर कहा–"उपमन्यु! तुम इसे खा लो, तुम्हारा अंधापन दूर होगा।" मगर उपमन्यु ने साफ़ कह दिया–"मैं अपने गुरु की अनुमति के बिना इसे नहीं खा सकता।"

इस पर देवता प्रसन्न हुए और उपमन्यु को उसके गुरु के पास लाये। गुरु की अनुमति पाकर उपमन्यु ने रोटी खाई। तुरंत उसे दृष्टि के साथ पूर्ण स्वस्थता भी पहुँची। तब गुरु तथा अश्विनी देवताओं ने उसे आशीर्वाद दिये।

अवीक्षित

प्राचीन काल में करंधम नामक एक राजा राज्य करते थे। उनकी पत्नी का नाम वीरा था। उनके जब एक पुत्र पैदा हुआ तब ज्योतिषियों ने बताया-"इस बालक पर दुष्ट ग्रहों का वीक्षण नहीं पड़ेगा।" इस कारण उस बालक का नामकरण "अवीक्षित" किया गया।

राजा करंधम के पिता जनता का शोषण करते थे, इस कारण मंत्रियों तथा प्रजा ने भी उन्हें राज्य से भगाकर करंधम का राज्याभिषेक किया। करंधम ने यह सोचकर अपने खजाने का सारा धन मंत्री तथा जनता के बीच बांट दिया कि कहीं उसका भी अपने पिता का हाल न हो जाय! जब यह बात पड़ोसी राजाओं को मालूम हुई, तब करंधम की राजधानी पर हमला करके उन्हें जंगलों में भगा दिया। पर करंधम ने जंगलों में ही सेना इकट्ठी करके फिर से अपने राज्य पर अधिकार कर लिया।

अवीक्षित बड़ा प्रतिभाशाली था। इस कारण क्रमशः वीरा, गौरी, सुभद्रा, लीलावती, दारिका और कुमुद्वती नामक कन्याओं ने स्वयंवरों में उसे वरण किया। इस बीच विशाला नामक एक राजकुमारी का स्वयंवर आ पड़ा। अवीक्षित उस स्वयंवर में भी हाजिर हुआ। मगर कई राजकुमार पहले से ही अवीक्षित के प्रति ईर्ष्या करते थे, इसलिए सब ने उसके साथ अधर्म युद्ध करके उसे हराया। मगर विशाला ने अन्य राजकुमारों के साथ वरण करने से इनकार किया, फलतः स्वयंवर रुक गया।

इस बीच करंधम को अपने पुत्र की हार का पता चला, वे बड़ी सेना के साथ आ पहुँचे। सब को पराजित कर अवीक्षित को बंधन मुक्त किया। इसके बाद विशाला

अवीक्षित के साथ विवाह करने को तैयार हो गई। मगर अवीक्षित पराजित हो गया था, इसलिए वह विशाला के साथ विवाह करने को राजी न हुआ।

इस पर अवीक्षित के पिता उसे अपने घर ले गये, पर अवीक्षित ने ब्रह्मचर्य व्रत का अवलंबन किया। उधर विशाला भी अवीक्षित को ही अपना पति बनाना चाहती थी, इस कारण वह भी जंगलों में जाकर तपस्या करने लगी।

अवीक्षित की माँ अवीक्षित को फिर से गृहस्थ बनाना चाहती थी। उसने कहा–"बेटा, मैंने किमिच्छक व्रत ले रखा है। जो भी कुछ माँगे, तुम्हें उसे देना होगा।" अवीक्षित ने अपनी माँ की बात मान ली। उसकी माता ने व्रत प्रारंभ किया। अवीक्षित याचकों को उनकी मुँह माँगी चीज देता गया।

एक बार अवीक्षित के पास उसके पिता करंधम ने प्रवेश करके अपने लिए एक पोते की माँग की। अवीक्षित इनकार नहीं कर सकता था, इसलिए उसने गृहस्थ जीवन बिताने को मान लिया।

एक दिन अवीक्षित को जंगल में यह आर्तनाद सुनाई दिया–"मैं अवीक्षित की पत्नी हूँ! मुझे बचाइये।" अवीक्षित अपने कानों पर विश्वास न कर पाया। वह आगे बढ़ा। राक्षस के हाथ में बन्दी बनी एक नारी को देख अवीक्षित ने उसे छुड़ाया। राक्षस का वध करने पर देवता अवीक्षित पर प्रसन्न हुए और उसे वर माँगने को कहा। इस पर अवीक्षित ने कहा–"मेरे पिता एक पोता चाहते हैं, इसलिए मुझे एक पुत्र चाहिए।"

"तो तुम इसी नारी के द्वारा एक पुत्र पैदा करो।" दिव्य पुरुषों ने कहा।

अवीक्षित ने कहा–"मैंने विशाला को वर लिया है। दूसरी नारी के द्वारा बच्चे पैदा करना मैं नहीं चाहता।"

"विशाला तो यही है। तुम्हारी पत्नी बनने के वास्ते ही यह तपस्या कर रही है।" दिव्य पुरुषों ने समझाया।

कथावाचक

एक गाँव के मंदिर में कथावाचक पुराण पाठ कर रहा था। संदर्भवश उसने कहा–"दूसरों की संपत्ति चुराने से वह बचेगी नहीं, निश्चय ही वे लोग बिगड़ जायेंगे।"

ये बातें तीन चोरों ने सुन लीं। उन्होंने सोचा–"इसी कथावाचक के घर चोरी करके इसकी बात को झूठा साबित करेंगे।" उन चोरों के नाम थे इडुंब, कडुंब और दुडुंब।

आधी रात के वक़्त तीनों ने कथावाचक के घर सेंध लगायी। भीतर घुसकर कथावाचक और उसकी पत्नी को रस्सियों से बांध दिया। उनके मुंह में कपड़े ठूंसकर गहने, रुपये और क़ीमती बर्तन लूट लिये, गठरी बांधकर वहां से भाग गये।

तीनों ने यह निश्चय किया कि उस रात को वह गठरी कहीं गाड़कर रख दे, चोरी की बात जब सब लोग भूल जायेंगे, तब गठरी निकालकर तीनों आपस में बराबर बांट लेंगे। फिर गाँव के बाहर एक जगह तीनों ने गड्ढा खोदा, गठरी को उसमें गाड़ दिया, मिट्टी ढककर तीनों तीन दिशाओं में चले गये।

मगर उन तीनों चोरों के बीच बंटवारे में हमेशा असंतोष बना रहता था। मगर जब तक वे लोग इस चोरी की विद्या में कुशल न बने तब तक साथ मिलकर चोरियां करने में ही अपनी ख़ैरियत समझते थे।

इस बार तीनों के मन में एक ही विचार पैदा हुआ। वह यह कि प्रत्येक व्यक्ति बाक़ी दोनों को दगा देकर गठरी का सारा सामान ख़ुद हड़प ले।

इडुंब थोड़ी ही दूर आगे बढ़ा था, उसे एक कुआं दिखाई पड़ा। वह कुएं में

ज्योत्स्ना तिवारी

उतरकर एक सीढ़ी पर बैठ गया। सबेरा होने के पहले ही बाहर निकलकर गठरी ले वह अपना घर भाग जाना चाहता था।

कडुंब जिस ओर बढ़ा, वहाँ पर एक मकान बन रहा था। ईंटें करीने से चार-पाँच फुट ऊँचाई तक रखी गई थीं। वह भी गठरी को अकेले हड़प ले जाने के ख्याल से ईंटों के पीछे छुप गया।

थोड़ी देर बाद उसने कुछ ईंटों को बांध लिया, उसे साथ ले गहनों की गठरी निकाली, उसकी जगह ईंटोंवाली गठरी को रखा, गहनों की भारी गठरी को कुएँ के पास ले जाकर उसमें डाल दिया।

वह गठरी कुएँ की सीढ़ी पर बैठे इडुंब के सर पर टकराकर कुएँ के पानी में गिर गई। पानी ज्यादा गहरा न था। मगर गठरी की चोट खाकर इडुंब बेहोश हो पानी में जा गिरा।

पर इसका पता कडुंब को न था, वह लौट आया और ईंटों की गठरी को उठा लिया।

इस बीच तीसरा चोर दुडुंब इसी ख्याल से आया, गठरी ले जानेवाले कडुंब को देख डांटा—"अरे कमबख्त चोर! यह संपत्ति हम तीनों की है, तुम अकेले ही हड़पना चाहते हो?" यों गाली देते उसने कडुंब के सर पर लाठी जमा दी। कडुंब चोट खाकर वहीं पर बेहोश हो गिर पड़ा।

इसके बाद दुडुंब ईंटों की गठरी ले मकान बनने की दिशा में आगे बढ़ा। वहाँ पर आहट पाकर पहरेदार ने चिल्लाकर कहा—"अबे, यह चोर कौन है?" इन शब्दों के साथ पहरेदार ने दुडुंब के पैरों पर लाठी दे मारी। दुडुंब भी चोट खाकर गिर पड़ा। पहरेदार ने गठरी खोलकर देखा, उसमें ईंटें थीं। पहरेदार ने सोचा कि दुडुंब ईंटें चुरानेवाला चोर है।

सबेरा होते ही कडुंब और कुएँ में गिरे इडुंब भी पकड़े गये। इस तरह चोरी का पता चल गया। चोरी का माल चोरों के हाथ न लगा। इस तरह कथावाचक की बात सौ की सदी सच निकली।

जो बैल रास्ते पर आया

मंगल ने हाट में दो बछड़े खरीदे, उनका जोड़ी बनाकर उनके नाम राम और भीम रखा, खेतीबाड़ी के काम पर लगाया।

राम अच्छी नस्ल का बछड़ा था। उसने जल्द ही सारे काम सीख लिये, लेकिन भीम बड़ा जिद्दी था। खेत जोतते वक्त वह जुए को हटा देता, गाड़ी में जोतने पर जुए से बचकर भाग जाता! पर चारा खूब चरता, जब-तब रस्सा तोड़कर खेत में घुसकर चर जाता।

छे महिने बीत गये, लेकिन भीम रास्ते पर न आया। खेतीबाड़ी के बहुत सारे काम एक साथ आनेवाले थे। खेतों में ईख कटाई के लिए एक दम तैयार थी। जल्दी ईख को काटकर गाड़ियों पर भेजकर गुड़ बनवाना जरूरी था, खाद खेतों में ले जाना था, तिलवाले खेत में जुताई करनी थी।

मंगल ने भीम को रास्ते पर लाने के लिए सोच-समझकर एक उपाय किया। उसने भीम को एक तेली के हाथ सौंपकर दो दिन तक कोल्हू चलाने में लगाने को कहा। दिन भर भीम की आँखों पर पट्टी बांधकर कोल्हू में जब घुमाया जाने लगा, तब भीम की दुनियाँ अंधकारमय प्रतीत हुई। उसका साथी राम भी उसके साथ न था। यदि जिद्द कर देता तो तेली उस पर बेरहमी के साथ लाठी चला देता था।

इसलिए भीम को वे दो दिन दो युगों के बराबर मालूम हुए।

तीसरे दिन मंगल ने भीम को एक इक्केवाले के हाथ सौंप दिया, इक्के में एक ही बैल जुतता है, इस कारण दो बैलोंवाली गाड़ी के जुए को जैसे वह उतार फेंक सकता था, वैसा कर न पाया।

राजेन्द्र भट्ट

खाद के बोरे पटेल, पटवारी तथा अन्य लोगों के घर भीम को खींचकर ले जाने पड़े, वे दो दिन भीम को बड़ी मुसीबत के मालूम हुए।

इक्केवाले के यहाँ दो दिन बीत गये, तब मंगल ने भीम को मोट चलाने के लिए नारायण के हाथ सौंप दिया। यह काम और भी कठिन था। बराबर उसे धूप में आगे-पीछे जाना पड़ता था। हठ करने पर पीठ पर चाबुक की मार पड़ती थी। तब उसे लगा कि कोल्हू का काम ही इससे कहीं ज्यादा आसान है। क्योंकि वह काम पेड़ों की छाया में करना पड़ता था। पर यहाँ दुपहर की कड़ी धूप में पसीना छूट जाता, मुंह में से झाग निकलता, तब भी नारायण ने बेरहमी के साथ उससे काम लिया।

इसके बाद मंगल ने भीम को दो दिन के वास्ते ऐसे आदमी के हाथ सौंप दिया जो कुएँ के पानी को चमड़े के थैले से खिचवा लेता था। यह काम और कहीं ज्यादा मुश्किल का था। भीम अगर आगे जाता तो पानी से भरा चमड़े का थैला कुएँ से बाहर आता, फिर वह पीछे जाता तो वह थैला कुएँ में चला जाता। इस तरह उसने भी भीम से दो दिन तक धूप में कसकर काम लिया।

यहाँ पर भी दो दिन बीत गये। तब दूसरे दिन शाम को मंगल आकर भीम को अपने घर हांक ले गया। आठ दिन बाद अपने मालिक मंगल को देखते ही भीम की जान में जान आ गई। क्योंकि औरों की अपेक्षा उसका मालिक वक्त पर बड़ी लगन के साथ दाना-चारा देता और पानी पिलाता था। वहाँ उसे भर पेट चरकर बड़ा आराम मालूम होता था। उसे हमेशा छाया में बांधकर रख छोड़ता था।

इसके बाद भीम ने जिद करना छोड़ दिया, वह अब रास्ते पर आ गया था। राम के साथ वह भी खेतीबाड़ी के काम ठीक से करने लग गया।

बेटे के वास्ते!

विजयदुर्ग नामक गाँव में विश्वनाथ नामक एक नामी वैद्य था। उसके भीतर अपने पेशे के प्रति ज्यादा अहंकार था। यही गुण वह अपने बेटे को भी सिखाता आया।

एक बार विश्वनाथ बीमार पड़ा। उसकी दवा काम न दे सकी। उसे लगा कि अब उसकी मौत निश्चित है। किसी दूसरे वैद्य से इलाज करवा ले तो उसका यश जाता रहेगा और साथ ही वह जो कुछ जानता था, वही इलाज अपने बेटे के द्वारा कराते हुए मौत का इंतज़ार करने लगा।

विश्वनाथ की मौत निकट आया जानकर शरभ नामक एक वैद्य उसे देखने आया। शरभ का विचार था कि यदि विश्वनाथ मर गया, तो उसकी जगह वह ले लेगा। विश्वनाथ ने यह बात ताड़ ली, अपनी सारी ताक़त बटोरकर वह खाट पर उठ बैठा, उसने शरभ से बताया कि उसका बेटा उसका अद्‌भुत ढंग से इलाज कर रहा है। शरभ खुश हुआ और यह सोचकर विजयदुर्ग से चल पड़ा कि अब उस गाँव में जम पाना मुश्किल है।

अपने पुत्र को चकित देख विश्वनाथ ने कहा–"बेटा, तुम्हारा बड़प्पन जताने के लिए मैंने श्रम उठाया। वरना शरभ आकर इस गाँव में अपना धंधा शुरू करता, तुम्हें खाने के लिए लाले पड़ जाते।" यों कहते वह पीछे की ओर टूट पड़ा और अपने प्राण छोड़ दिये।

नाटे पिशाच

जोधासिंह की कन्या की शादी पक्की हो गई। लेकिन अपने ही घर शादी करने से ज्यादा खर्च होगा और सारे गाँववालों को न्योता देना पड़ेगा, इस ख्याल से कंजूस जोधासिंह ने एक दूसरे गाँव में शादी करने का इंतजाम किया और गाँववालों से झूठ बोला कि दूल्हे के बाप ने उसी गाँव में शादी करने पर जोर दिया है।

शादी के दो दिन पहले सारा इंतज़ाम करने के लिए जोधासिंह ने अपने बेटे को उस गाँव में भेजा और एक दिन पहले जोधासिंह अपनी पत्नी और बेटी को साथ ले निकट रिश्तेदारों के साथ बैल गाड़ी में रवाना हुआ।

वैसे रास्ते में कोई अड़चन न होती तो वे लोग उस दिन रात को उस गाँव में पहुँच सकते थे। लेकिन रास्ते में एक बैल बीमार पड़ा। उसे किसी गृहस्थ के घर छोड़कर जोधासिंह ने एक दूसरा बैल ठीक किया, तब रवाना हुआ। इस कारण संध्या के समय तक वे लोग अपने सफर का आधा रास्ता भी तै नहीं कर पाये।

जोधासिंह यह सोचकर मन ही मन दुखी होने लगा कि उसके बेटे ने शादी करने के लिए सराय ठीक करके किराया दिया होगा और रसोई भी बनवाया होगा, यह सारा खर्च बेकार गया।

इसके साथ पानी भी बरसा जिससे सारा रास्ता कीचड़ से भर गया। रास्ते के किनारे के श्मशान से गीदड़ों और उल्लुओं की चिल्लाहटें भी सुनाई देने लगीं जो बहुत ही डरावने थी। रास्ता ऊबड़-खाबड़ था, एक जगह अचानक गाड़ी कीचड़ में धँस गई।

रघुनाथ शर्मा

सब लोग गाड़ी से उतर पड़े और गड्ढे में से गाड़ी को ऊपर खींचने की कोशिश करते रहें, मगर कोई फ़ायदा न रहा ।

इस बीच जोधासिंह को कोई भयंकर कोलाहल सुनाई दिया । उसे लगा कि गाड़ी की छत पर कोई अचानक कूद पड़ा है ।

जोधासिंह ने गाड़ी पर देखा और वह चकित रह गया । छत पर कुछ नाटे पिशाच पल्थी मार रहे थे ।

"तुम लोग कौन हो?" जोधासिंह ने पूछा ।

"हम लोग नाटे पिशाच हैं, मगर तुम लोग इस श्मशान में आये ही क्यों?" पिशाचों ने उल्टा सवाल किया ।

जोधासिंह ने हिम्मत बटोरकर कहा– "श्मशान में आने की हमें ज़रूरत ही क्या है? हम ऐसे बदकिस्मत थोड़े ही हैं? कल तो हमारी लड़की की शादी है ।"

"अरे शादी है! शादी! लड्डू-जलेबियाँ हाथ लगेंगी!" यों कहते पिशाच नाचने लगे ।

"हूँ, कहाँ की शादी है? गाड़ी तो कीचड़ में धँस गई है । ऊपर आने का नाम तक नहीं लेती ।" जोधासिंह ने कहा ।

"सुनो, हमें भी शादी में ले जाओगे तो हम पल भर में गाड़ी को कीचड़ से बाहर निकालेंगे ।" पिशाचों ने शर्त रखी ।

"गाड़ी को बाहर निकालो, तुम्हें शादी में ले जाऊँगा ।" जोधासिंह ने कहा ।

इसके बाद सब लोग गाड़ी पर जा बैठे। पिशाच गाड़ी की छत पर से नीचे कूद पड़े और पल भर में गाड़ी को कीचड़ में से बाहर निकाला। गाड़ी दुगुनी रफ़्तार से चलने लगी।

"तुम भी कैसे आदमी हो? रिश्तेदारों से पिंड छुड़ाकर शादी में इन पिशाचों को ले जा रहे हो?" जोधासिंह की पत्नी ने ताने दिये।

"तुम्हारे दिमाग में गोबर भरा है। हमें उस गाँव तक पहुँचते-पहुँचते सवेरा हो जाएगा। पिशाच अपने रास्ते भाग जायेंगे।" जोधासिंह ने अपनी युक्ति बताई।

"गाड़ी की रफ़्तार देखने से ऐसा मालूम होता है कि हम सवेरा होने के पहले ही उस गाँव में पहुँच जायेंगे। तब तुम क्या करोगे? इन पिशाच मेहमानों की खातिरदारी मैं नहीं करूँगी। तुम्हें भी यह सब देखना होगा।" जोधासिंह की पत्नी खीझकर बोली।

"औरतें तो दूर की बातें नहीं सोचतीं। गाँव पहुँचते ही मैं भद्रकाली के मंदिर के पास गाड़ी रोककर पिशाचों से बताऊँगा— 'चलो, अन्दर चलो! यहीं शादी होनेवाली है।' बस, पिशाच सब चंपत हो जायेंगे।" यों कहकर जोधासिंह ठठाकर हँस पड़ा।

जोधासिंह की पत्नी अपने पति की अक़्लमंदी पर खुश हुई, पर प्रकट रूप में खीझ का अभिनय करते बोली—"ज़ोर से मत बोलो, ये बातें पिशाच सुन लेंगे।"

इसके बाद शायद वे सब लोग सो गये थे। गाड़ी में धक्का खाकर जब सब जाग पड़े, तब तक सवेरा हो चुका था।

जोधासिंह ने गाड़ी से उतरकर देखा, लेकिन गाड़ी रात को जहाँ कीचड़ में धंस गई थी, वहीं थी।

"अरी, तुमने मुझे बेकार बकने दिया। मेरी बातें सुन पिशाच रात भर गाड़ी के पहिये घुमाते रहे, फिर इस गड्ढे में ढकेलकर चंपत हो गये।" जोधासिंह ने यों अपनी पत्नी को ताने दिये।

अंधविश्वास

रत्नपुर का व्यापारी धनगुप्त कई वर्षों तक समुद्री व्यापार करते पूर्वी टापुओं में बस गया, वहीं पर एक सुंदर कन्या के साथ विवाह करके अपार धन कमाया, आखिर जब अपने गाँव को उस भारी संपत्ति के साथ लौट आया। एक दिन वह अपने बचपन का साथी रामगुप्त को देखने गया।

रामगुप्त ने भी व्यापार में लाखों रुपये कमाये, वह राजाओं के बराबर वैभवपूर्ण जीवन बिता रहा था। दोनों मित्रों ने बड़ी देर तक एक दूसरे को अपने अनुभव सुनाये।

रामगुप्त के मकान पर "सुदर्शन निलय" नामपट्ट देख धनगुप्त ने रामगुप्त से पूछा-"दोस्त, यह सुदर्शन कौन है?"

"सुदर्शन मेरा छोटा पुत्र है। उसके पैदा होने के बाद ही मेरी क़िस्मत खुल गई। उस समय से मैं मिट्टी भी छू लेता हूँ तो वह सोना बन जाती है।" रामगुप्त ने जवाब दिया।

इसके बाद बड़ी देर तक बातचीत होती रही, पर हर बात में रामगुप्त अपने छोटे पुत्र का जिक्र करता, बड़े पुत्र का समाचार पूछने पर उस बात को टाल देता। इस पर धनगुप्त ने पूछा-"तुमने यह नहीं बताया कि आखिर तुम्हारे कितने बेटे हैं?"

"मेरे दो बेटे हैं। बड़ा बेटा सुमंत दस साल का है और छोटा छे साल का है।" रामगुप्त ने उत्तर दिया।

धनगुप्त को इस बात का आश्चर्य हुआ कि रामगुप्त जैसे स्वावलंबी को अपने ऊपर विश्वास होना चाहिए, पर अपनी क़िस्मत के अन्य कारणों पर नहीं!

इससे भी भयंकर बात यह थी कि जब रामगुप्त अपने छोटे बेटे की क़िस्मत

दिनेश ठाकुर
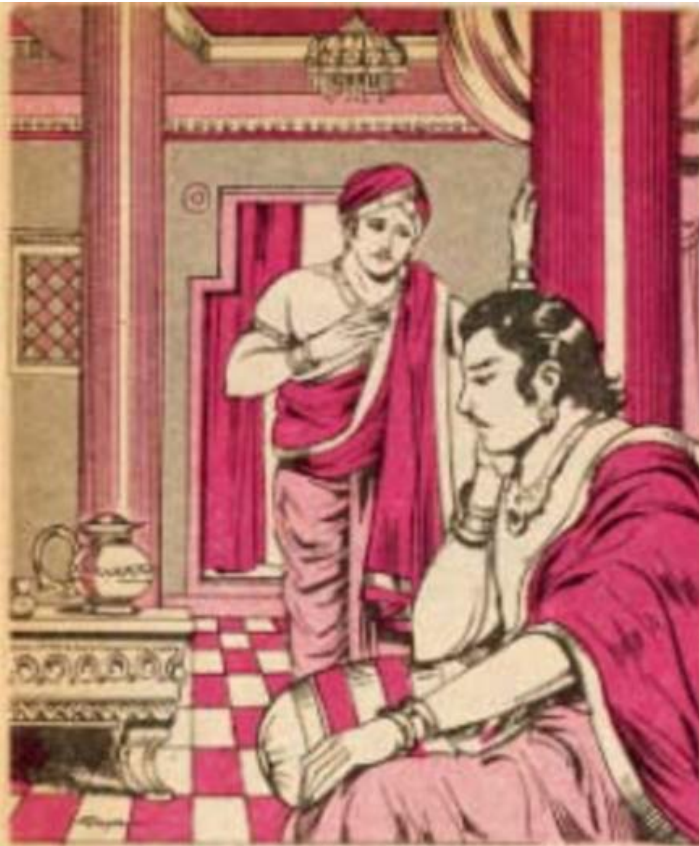
पर ऐसा प्रबल विश्वास रखता है, तब वह घमण्डी बनकर बिगड़ सकता है। इसी प्रकार रामगुप्त के बड़े पुत्र के भीतर उसका आत्मविश्वास मिट जाने का खतरा भी है। यों सोचकर धनगुप्त ने कहा–"सुनो रामगुप्त! मेरे अब तक कोई संतान नहीं है! मेरी पत्नी विदेशवासिनी है। वह एकाकीपन का अनुभव न करे, इसलिए तुम अपने बड़े बेटे को हमारे घर क्यों नहीं भेज देते? थोड़े समय तक वह हमारे घर पलेगा न?"

वैसे धनगुप्त रामगुप्त से कहीं बड़ा धनी था, इसलिए रामगुप्त ने अपने बड़े बेटे सुमंत को धनगुप्त के घर भेज दिया।

थोड़े दिन बीत गये। एक दिन रामगुप्त धनगुप्त को देखने गया। धनगुप्त उदास मालूम हो रहा था। रामगुप्त ने इसका कारण पूछा।

"दोस्त! मैं उदास क्यों न रहूँ? जब से मैंने समुद्री व्यापार शुरू किया, आज तक कोई तकलीफ़ नहीं हुई। मगर आज ही मुझे खबर मिली कि मेरा एक जहाज लाखों रुपयों की क़ीमती माल के साथ समुद्र में डूब गया है। पर मैं कारण नहीं जानता, लेकिन यह बात सत्य है कि जब से तुम्हारे बेटे ने मेरे घर में क़दम रखा, तब से मेरा नुक़सान ही होता रहा है।" धनगुप्त ने कहा।

यह बात सुनने पर रामगुप्त को थोड़ा कष्ट हुआ, पर उसने अपने मित्र के इस नुक़सान के प्रति सहानुभूति जताई।

थोड़े दिन और बीत गये। एक दिन संध्या के समय धनगुप्त चिंतापूर्ण बदन के साथ रामगुप्त के घर पहुँचा। रामगुप्त ने अपने मित्र को उदास देख घबराकर पूछा–"दोस्त! बात क्या है? फिर से कोई नुक़सान तो नहीं हुआ है न?"

"इस बार धन से भी बढ़कर खतरा आ पड़ा है। इस बार मेरी पत्नी एक विचित्र बीमारी का शिकार हो गई है। वैद्य उस बीमारी का निदान तक नहीं

कर पा रहे हैं। देखो, रामगुप्त! तुम्हें कभी अपने बड़े पुत्र की वजह से किसी अनिष्ट के होने का भान हुआ है? क्योंकि उसके मेरे घर आने के बाद एक भी ऐसी घटना नहीं हुई जिससे मुझे प्रसन्नता होती!" धनगुप्त ने समझाया।

धनगुप्त की बातें सुनने पर रामगुप्त का क्रोध भड़क उठा। उसने बिगड़कर कहा–"मेरे बेटे ने मुझे आज तक एक भी अनिष्ट नहीं पहुँचाया! उसे तुमने ही खुद अपने घर ले जाने की इच्छा प्रकट की। तुम्हें अगर कोई नुकसान हुआ है तो उसके सही कारण जानने का प्रयत्न किये बिना सब का मूल मेरे बेटे को मानना तुम्हारे अंधविश्वास को सूचित करता है। तुम उसे तुरंत मेरे घर भेज दो!"

रामगुप्त के मुँह से ये बातें सुनने पर धनगुप्त का चेहरा खिल उठा। उसने कहा–"हाँ, रामगुप्त। यही मुझे भी अच्छा मालूम होता है, तुम अपने लड़के को अपने घर ले जाओ! अभी तुम मेरे साथ चलो, फिर देरी ही किसलिए?"

रामगुप्त ने धनगुप्त के घर जाकर देखा। वहाँ पर चिंता का कोई कारण न था। उसका घर एकदम शोभायमान था! आनंदप्रद था। धनगुप्त की पत्नी सारे बदन में क़ीमती आभूषण पहने हुए थी। एक क़ीमती रेशमी साड़ी पहने लक्ष्मीदेवी की भाँति इधर-उधर टहलते

मुस्कुराते हुए रामगुप्त के सामने आ पहुँची और कुशल-प्रश्न पूछा।

इससे भी बढ़कर आश्चर्य की बात यह थी कि रामगुप्त का बड़ा बेटा उल्लासपूर्वक उछल-कूद करते ऐसा खेल रहा था, मानो सारा घर उसी का हो! पर अपने पिता को देखते ही वह दुबककर एक कोने में जा बैठा। इसे देख रामगुप्त अवाक् हो धनगुप्त की ओर ताकता रह गया। उसकी समझ में न आया कि धनगुप्त से आखिर क्या कहा जाय?

"रामगुप्त! क्या बात तुम्हारी समझ में नहीं आई? अगर समझ में आ गई हो तो अच्छी तरह से समझ लो कि मेरा अगर कोई नुकसान भी हुआ होता तो मैं ऐसा माननेवाला मूर्ख भी नहीं हूँ कि यह तुम्हारे बेटे की वजह से हुआ है। तुम अपने छोटे बेटे के बारे में सब लोगों से यह कहते फिरते हो कि वह तुम्हारे भाग्य का देवता है। ये बातें सुनने पर तुम्हारे बड़े बेटे का दिल कैसे बैठ सकता है, क्या तुमने इसके बारे में भी कभी सोचा है? साथ ही अपने छोटे के मन में इस बात का कैसा अहंकार पैदा हो सकता है, इस पर भी तुमने विचार नहीं किया। ये ही बातें सोचकर मैं डर गया और तुम्हारे भीतर ज्ञानोदय कराने के हेतु मैं तुम से दो बार झूठ बोला। तुम बुरा मत समझो! मान लो, कल अगर तुम्हारी क़िस्मत ने साथ नहीं दिया कि उसका कारण अपने को ही मान तुम्हारा छोटा बेटा कैसे दुखी होगा? यह भी सोचा है? तुमने जब मेरे भीतर अंधविश्वास को पहचाना तभी मेरा प्रयत्न सफल हो गया! अब तुम अपने लड़के को अपने घर ले जाओ।" धनगुप्त ने समझाया।

इस पर रामगुप्त ने सिर झुकाकर कहा—"मैं सारी बातें समझ गया। मेरे बदलने में अभी थोड़ा समय लग सकता है। थोड़े दिन और इसे तुम्हारे घर रहने दो! ऐसा मालूम होता है कि यह तुम्हारे ही घर ज्यादा सुखी है।"

महिषासुर का वध करके देवी अंतर्धान हो गई। तब देवताओं ने महिषासुर के राज-सिंहासन पर शत्रुघ्न नामक सूर्यवंशी राजा को बिठाया, उसका राज्याभिषेक कर अपने लोक को चले गये। शत्रुघ्न ने अपनी प्रजा पर आदर्श पूर्ण शासन किया।

इस प्रकार सारा विश्व जब सुख और शांति पूर्ण था, तब फिर से दानवों ने अशांति पैदा की। रसातल में शुंभ और निशुंभ नामक दो दानवों ने अन्न-जल तक त्याग कर घोर तपस्या की। उनकी तपस्या पर प्रसन्न होकर ब्रह्मा प्रत्यक्ष हुए और उनसे वर मांगने को कहा।

"भगवन, हमें ऐसा वरदान दीजिए, जिससे हमारी मृत्यु न हो।" दोनों ने कहा।

"ऐसा संभव नहीं, तुम लोग कोई दूसरा वर मांग लो।" ब्रह्मा ने कहा।

इस पर शुंभ और निशुंभ बोले-"तब ऐसा वर दीजिए कि औरत के हाथों से छोड़ किसी और व्यक्ति के द्वारा हमारी मृत्यु न हो?" ब्रह्मा ने ऐसा ही वर दिया।

ब्रह्मा के द्वारा यह वरदान पाकर उन दोनों भाइयों ने भृगु महामुनि को अपना पुरोहित नियुक्त किया। एक अच्छे मुहूर्त में शुंभ ने अपना राज्याभिषेक करवा लिया और अपने छोटे भाई निशुंभ को अपना मंत्री नियुक्त किया। चन्ड और मुण्ड नामक महान वीर सेनापति बनाये गये। पाताल से धूम्रलोचन तथा रक्तबीज नामक दो दानव अपनी दो अक्षौहिणी सेना के

१५. शुंभ और निशुंभ

साथ आकर उनके दरबारी बन गये। रक्तबीज युद्ध-कला में निपुण था और उद्दण्ड भी। युद्धभूमि में अगर उसका रक्त पृथ्वी पर गिर जाता तो उसमें से उसके जैसे हज़ारों वीर पैदा हो जाते। इसीलिए उसका नाम रक्तबीज पड़ गया।

इसी प्रकार अनेक दानव वीर शंभु के दरबार में आ मिले। एक बार निशुंभ के मन में इन्द्र को जीतने की इच्छा हुई। वह अमरावती नगर पर चढ़ बैठा, तब इन्द्र देवताओं को साथ लेकर आये और निशुंभ के साथ युद्ध किया। उस युद्ध में इंद्र ने निशुंभ पर अपने वज्रायुध का प्रहार किया, जिससे वह बेहोश हो गया।

अपने छोटे भाई के बेहोश होते ही शंभु क्रोध में आ गया, देवताओं को हराकर उसने इंद्रत्व ले लिया। तब अष्ट दिक्पालों को अपने अधीन करके तीनों लोकों पर शासन करने लगा। इसके बाद नंदनवन में अप्सराओं के साथ आनंदपूर्वक विहार करने लगा।

थोड़े दिन बाद दिकपालों के स्थान पर शंभु ने अपने विश्वासपात्र दानवों को नियुक्त किया। देवता जंगलों में भाग गये, वहाँ पर अनेक यातनाएँ झेलने लगे।

इस प्रकार एक हज़ार साल बीत गये। इंद्र आदि देवताओं की समझ में न आया कि स्वर्ग पर फिर से अधिकार कैसे कर लिया जाय। एक दिन वे अपने गुरु बृहस्पति के पास पहुँचे और बोले– "महात्मा! आप देवताओं को इस बुरी हालत से बचाने का कोई उपाय कीजिए! मंत्र-तंत्र तो बड़ा ही प्रभाव रखते हैं। उनके द्वारा कोई 'अभिचार होम' करके हमारा राज्य वापस दिला दीजिए।"

इस पर देवगुरु बृहस्पति ने समझाया– "हे इन्द्र! मंत्र-तंत्र भी विधि या नियति के अधीन होकर काम देते हैं। उनके अधिपति बने आप ही लोग दुर्दशा का अनुभव करते हैं। इस हालत में मंत्र आप के लिए कैसे सहायकारी होंगे? फिर

भी एक काम कर सकते हैं! जगज्जननी ने महिषासुर का संहार किया है। आप लोग फिर उन्हीं के आश्रय में जाइये! उस देवी का मायाबीज पुनश्चरण कीजिए! शायद आप को सफलता मिल जाय!"

इस पर देवता हिमालयों में गये; मायाबीज का जाप करते देवी का स्त्रोत्र करने लगे।

उस वक़्त देवी एक बढ़िया साड़ी व स्वर्णाभूषण पहने एक गुफ़ा से बाहर निकली, देवताओं को देख बोलीं-"तुम लोग यहाँ किस काम से आये हो? बात क्या है?"

देवताओं ने हाथ जोड़कर देवी से निवेदन किया-"माताजी, हमें इस विपदा से उबारिये! शुंभ और निशुंभ नामक दानवों ने हम लोगों को हराकर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया है! ब्रह्मा के वरदान के फल स्वरूप उनका वध कोई नहीं कर सकते! आप ने बहुत समय पूर्व जब महिषासुर का संहार किया था, तब हमें वचन दिया था कि विपदा के वक़्त आप हमारी सहायता करेंगी। इस समय न केवल शंभु और निशुंभ हमारे शत्रु हैं, बल्कि रक्तबीज, चण्ड और मण्ड भी हमारे दुश्मन बने हुए हैं! आज सारे अष्ट दिक्पाल भी राक्षस ही हैं! इसलिए आप हम पर कृपा करके उन सभी राक्षसों का संहार कीजिए।"

इस पर देवी को देवताओं पर दया आ गई। अपने भीतर से उन्होंने कौशिकी नामक शक्ति पैदा की। वह शक्ति काली थी, इस कारण उस शक्ति ने कालिका या कालरात्रि नाम से एक भयंकर रूप धारण कर लिया। तब देवी ने देवताओं को अभय प्रदान किया-"देवताओ, तुम लोग चिंता न करो! मैं शंभु, निशुंभ तथा अन्य राक्षसों का भी संहार करके तुम लोगों का कल्याण करूँगी।" तब अपने भीतर से उत्पन्न कौशिकी को अपनी बगल में रखकर देवी सिंह पर सवार हो गईं। शत्रु के

नगर में पहुँचकर नगर के बाहर स्थित एक उद्यान में रुकी, अत्यंत मनोहर ढंग से देवी ने गान किया। उस संगीत को सुनकर देवता परमानंदित हुए। मृग सब तन्मय हो उठे। पक्षियों ने कान खड़े करके उस मधुर ध्वनि को सुना। सारा विश्व परवश हो उठा।

उस समय चन्ड और मुण्ड बड़ी प्रसन्नता पूर्वक उपवनों में विहार कर रहे थे। उन दोनों ने थोड़ी देर तक उस मधुर संगीत को सुना। देवी के निकट जाकर जगन्मोहिनी अंबा के अवतार को तथा उनकी बगल में स्थित कौशिकी को देख आश्चर्य में आ गये। तब नगर में लौटकर शंभु को प्रणाम करके बोले–"महाराज! एक स्त्री एक सिंह पर आरूढ़ हो कहीं से पधारी हुई है। उनके सौंदर्य का वर्णन करना असंभव है। इन तीनों लोकों में ऐसी रूपवती नारी कोई दूसरी न होगी। उनके संगीत की बात तो क्या कहें? हमारे उद्यान में वह गान कर रही है, पशु-पक्षी सब अपने को भूल उस गान में तन्मय हो गये हैं। उनके साथ एक और नारी भी है। इतनी सारी बातें क्यों? आप अभी जाकर उनका पता लगाइये, उनको अपने महल में लाकर उन्हें अपनी पत्नी बना लीजिए; इससे बढ़कर और कौन अपूर्व सुख हो सकता है? ऐरावत, पारिजात, उच्चैश्रव (इंद्र का घोड़ा) विमान को जीतनेवाले आप के लिए वह पत्नी बनने योग्य है।"

ये बातें सुनने पर शंभु एक दम उछल पड़ा, अपने समीप में स्थित सुग्रीव नामक व्यक्ति को बुलाकर उसने आदेश दिया–"तुम अभी जाकर उस नारी को ले आओ। जहाँ शृंगार का प्रसंग आता है, वहाँ पर भेद और दण्डोपाय काम नहीं देते। इसलिए तुम साम और दाम उपायों का ही प्रयोग करो।"

सुग्रीव उसी वक्त उद्यान में पहुँचा। सिंह पर सवार जगदंबा को देख प्रणाम
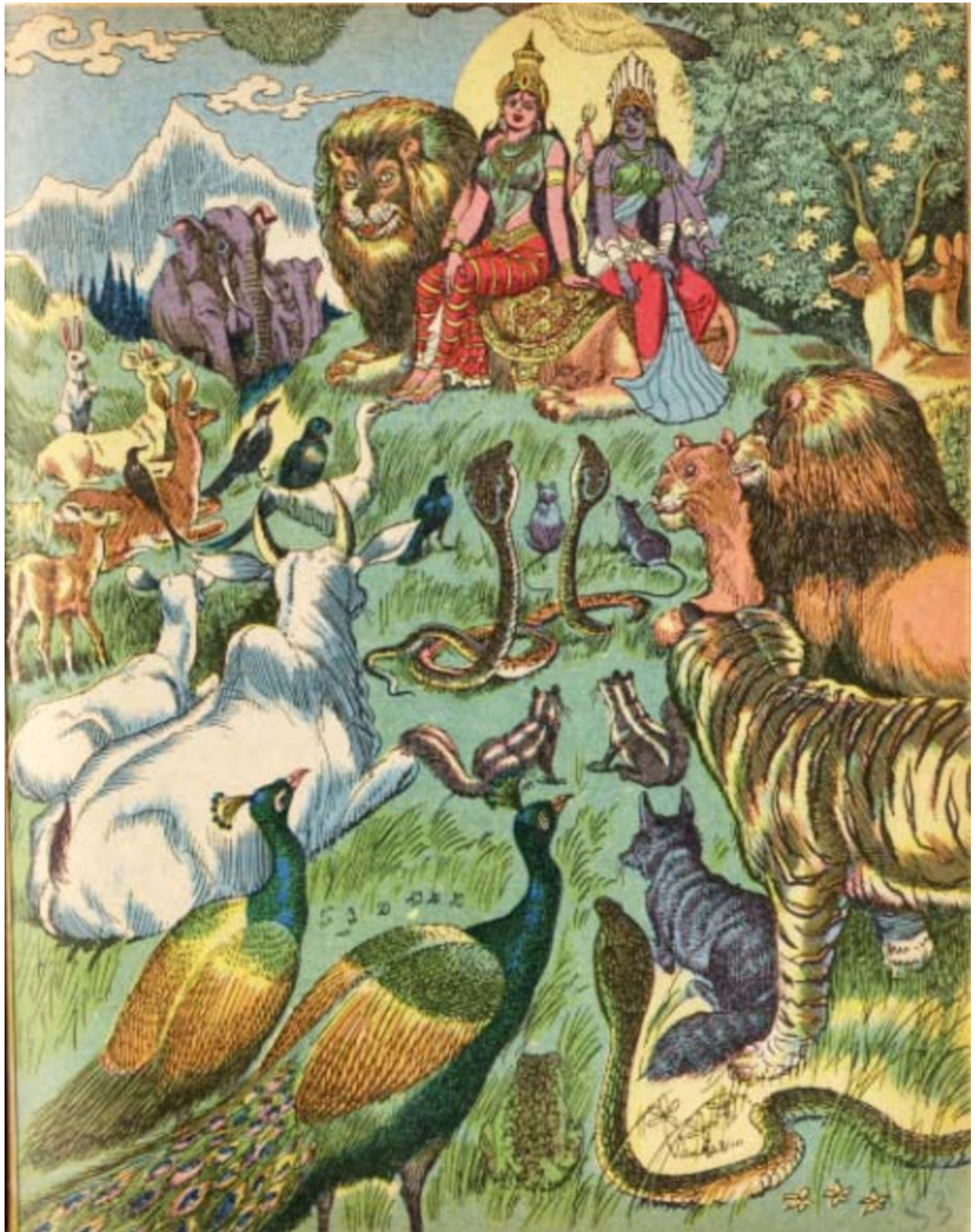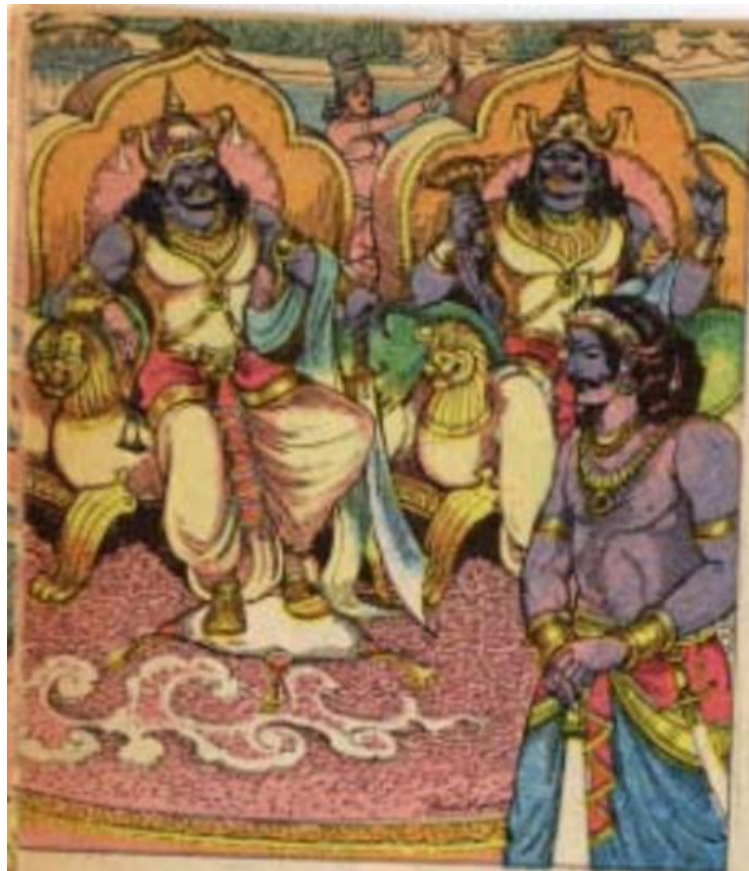
करके बोला–"माई, शंभु ने सारे देवताओं को पराजित किया है। वे कामदेव के अवतार हैं? क्या आप ने उनका नाम सुना है? मैं उन्हीं का एक दूत हूँ। आप के बारे में हमारे सम्राट ने सुना। आप पर मोहित हो मुझे आप को लिवा ले जाने को भेज दिया है। उन्होंने आप को यह संदेशा सुनाने को बताया है कि वे आप को अपनी बड़ी रानी बनाकर आप के प्रति विनम्रतापूर्ण व्यवहार करेंगे।"

ये बातें सुन देवी मुस्कुराकर बोलीं–"तुम्हारे राजा ने देवताओं को जीत लिया है। यह बात जानकर ही मैं उसके वास्ते आई हूँ। यह समाचार उसे सुना दो, मैंने यह व्रत ले रखा है कि जो वीर युद्ध में मुझे हराएगा, मैं उसी के साथ विवाह करूँगी। जब से मैंने यह व्रत ले रखा है, तब से आज तक मेरे इस अभिमान को तोड़नेवाला एक भी वीर मुझे दिखाई नहीं दिया। तुम जाकर अपने राजा से बता दो कि वह यह कार्य संपन्न करके तब मुझे अपनी बना ले, समझे।"

देवी के मुँह से ये शब्द सुनकर सुग्रीव चकित हो बोला–"माताजी, आप ने नारी सहज दुस्साहस के साथ ये बातें कह दीं, मगर शायद आप को मालूम नहीं कि शंभु का नाम सुनते ही महान से महान वीर थर-थर कांप उठते हैं। आप यह कैसे सोच सकती हैं कि इनको हरा सकेंगी? इसलिए कृपया आप अपना यह विचार त्यागकर शंभु के साथ या उसके छोटे भाई निशुंभ को अपना पति बनाकर सुखपूर्वक अपना जीवन बिताइये।"

इसके उत्तर में अंबा बोलीं–"मैं अपने व्रत को किसी भी हालत में तोड़ नहीं सकती। जो मेरे शूल के प्रहार से डरता है, उसके साथ मैं कैसे विवाह कर सकती हूँ? अगर तुम्हारा राजा मेरे साथ युद्ध करने के लिए तैयार नहीं है, तो उससे कह दो कि वह स्वर्ग और मर्त्य लोकों को छोड़कर अपने बंधु और मित्रों के साथ इसी वक्त रसातल में चला जाय!"

इस पर सुग्रीव तिलमिला उठा। वह एक पागल की भांति शंभु के पास पहुँचा। पहले उसने अपने राजा से क्षमा मांगी। तब उसे देवी का संदेशा सुनाया।

शंभु ने देवी का संवाद दूत के मुँह से सुना। तब अपने छोटे भाई निशुंभ की ओर मुड़कर पूछा–"सुनते हो, एक औरत दूसरी औरत को साथ ले हमारे साथ युद्ध करने आई हुई है। पहले उसके साथ युद्ध करने के लिए तुम जाओगे? या मैं ही चला जाऊँ?"

"भैया, तुम मत जाओ, मैं भी नहीं जाऊँगा, केवल धूम्रलोचन को भेज देने पर वह उस नारी को हराकर हमारे पास ले आएगा। तब दूसरे ही क्षण वह आप को वर लेगी।" निशुंभ ने सलाह दी।

यह सलाह शंभु को उचित प्रतीत हुई। उसने धूम्रलोचन को बुलाकर आदेश दिया–"तुम अभी जाओ। उस सुंदरी की सहायिका बनी नारी का वध करके उसे ले आओ। वह तुम पर बाणों का भले ही प्रयोग करे, पर तुम उस पर कठिन बाणों का प्रयोग करके दुखाओ मत! उसे प्राणों के साथ मेरे पास ले आओ।"

इसके बाद धूम्रलोचन अपनी सेना सहित देवी के पास पहुँचा और अपने प्रभु का प्रेम संदेशा उन्हें सुनाया।

इस पर कालिका बोली–"तुम्हें ये बातें कहते लज्जा नहीं होती? तुम युद्ध करो! जानते हो कि हमारी महादेवी यहाँ पर क्यों पधारी हैं? तुम्हारे शंभु और निशुंभ को काल के मेहमान बनाने आई हुई हैं, जाकर उसे बता दो।"

ये बातें सुन धूम्रलोचन क्रोध में आग बबूला हो उठा और बोला–"क्या तुम हमारे साथ दुश्मनी मोल लेना चाहती हो? तुम यह समझती हो कि मैं तुम लोगों का घमण्ड तोड़ नहीं सकता, इसीलिए अब तक मैं तुम्हें समझा रहा था?" इन शब्दों के साथ वह युद्ध के लिए तैयार हो गया और कालिका के हाथों में वह मर

गया। साथ ही अपने साथ आई हुई सेना को भी खो बैठा।

इसके बाद देवी ने ऐसा शंखनाद किया कि सारी दिशाएँ गूँज उठीं। वह ध्वनि सुनकर शंभु ने सोचा कि कोई अनहोनी हो गई है, वह दौड़कर आ पहुँचा। पर देखता क्या है, धूम्रलोचन और उसकी सेना का कहीं पता तक नहीं है। मृत व्यक्तियों तथा घोड़ों की लाशें उसे दिखाई दीं।

इस प्रकार शंभु की प्रणय गाथा उल्टी हो गई। अब उसके सामने एक ही रास्ता था, या तो उसे देवी के साथ संधि करनी थी या युद्ध करना था। पर देवी के साथ युद्ध कर सकनेवाले शूर-वीर शंभु के साथ अनेक थे।

सबसे पहले चण्ड और मुण्ड देवी के साथ लड़ने गये। उनके मरने पर रक्तबीज ने जाकर देवी को एक बार और सलाह दी कि देवी युद्ध करना छोड़ शंभु या निशुंभ में से किसी एक के साथ विवाह करे। देवी ने स्पष्ट शब्दों में कहा–"मैंने पहले ही अपना संदेशा सुनाया था कि मुझे हरा सकनेवाले के साथ ही मैं विवाह करूँगी। तुम फिर क्यों निरर्थक बातें करते हो? तुम अभी जाकर शंभु और निशुंभ से कह दो कि वे मुझे हराकर मेरे साथ विवाह कर लें।"

इस पर रक्तबीज नाराज हो उठा। देवी के साथ युद्ध करके पल भर में बेहोश हो रथ पर गिर पड़ा।

मगर रक्तबीज का रक्त जमीन पर गिरते ही उसकी एक एक बूंद से एक एक रक्तबीज पैदा होता गया। यों अनेक लोगों को पैदा होते देख देवी ने कालिका को आदेश दिया कि रक्तबीज का रक्त पृथ्वी पर गिरने के पहले ही कालिका उसे पी ले, तब देवी ने रक्तबीज के साथ सब का संहार किया। सब से अंत में युद्ध करके मरनेवाले शंभु और निशुंभ थे। आखिर जो राक्षस बच रहे थे, उन्हें देवी ने अभय प्रदान किया। इस पर वे लोग पाताल लोक में चले गये।

चोरी की लत

किसी राज्य में जब चोरियाँ अधिक हो गई, तब उस देश के राजा ने आदेश जारी किया कि जो भी चोर पकड़ा जाएगा, उसे सार्वजनिक प्रदेश में फांसी दी जाय! इस आदेश के अनुसार कई चोर फांसी के तख्ते पर चढ़ाये गये।

उसी राज्य के एक गाँव में नरसिंग और मोहनसिंग नामक दो डाकू थे। उनके साथियों को फांसी के तख्ते पर चढ़ाते देख वे डर गये और दोनों ने चोरी के पेशे को छोड़ने का निश्चय किया।

नरसिंग ने कहा–"मोहनसिंग! हमने आज तक चोरियाँ करके अपने सिर पर पाप का बोझ ले रखा है, अब हम सच्ची जिंदगी बितायेंगे।"

"हाँ, भाई! करने के लिए तो वैसे कई पेशे पड़े हुए हैं।" मोहनसिंग ने अपने दोस्त की हाँ में हाँ मिलाई।

इसके बाद उन दोनों ने अपने गाँव के जमीन्दार के यहाँ काम पा लिया। प्रति दिन बैलों को मैदान में ले जाकर चराने का जिम्मा नरसिंग का था और बगीचे में पेड़-पौधों की सिंचाई करने का काम मोहनसिंग को मिला।

पहला दिन सवेरे-सवेरे उठकर नरसिंग बैलों को मैदान में चराने ले गया। बैलों ने उसे खूब सताया। बैल आपस में लड़ते, दौड़ते, निकट के खेतों में घुसकर फसल चरते। उनको नियंत्रण में रखना नरसिंग के लिए बड़ा मुश्किल हो गया।

इस बीच मोहनसिंग बगीचे में पहुँचकर पेड़-पौधों को पानी सींचने लगा। उसने कई बाल्टियाँ भरकर पेड़ों को सींचा, पर पेड़-पौधे सारा पानी पी लेते थे। आधा बगीचा भी वह सींच न पाया, उसके हाथों ने जवाब दे दिया। शाम तक वह

२५ साल पहले की चन्दामामा की कहानी
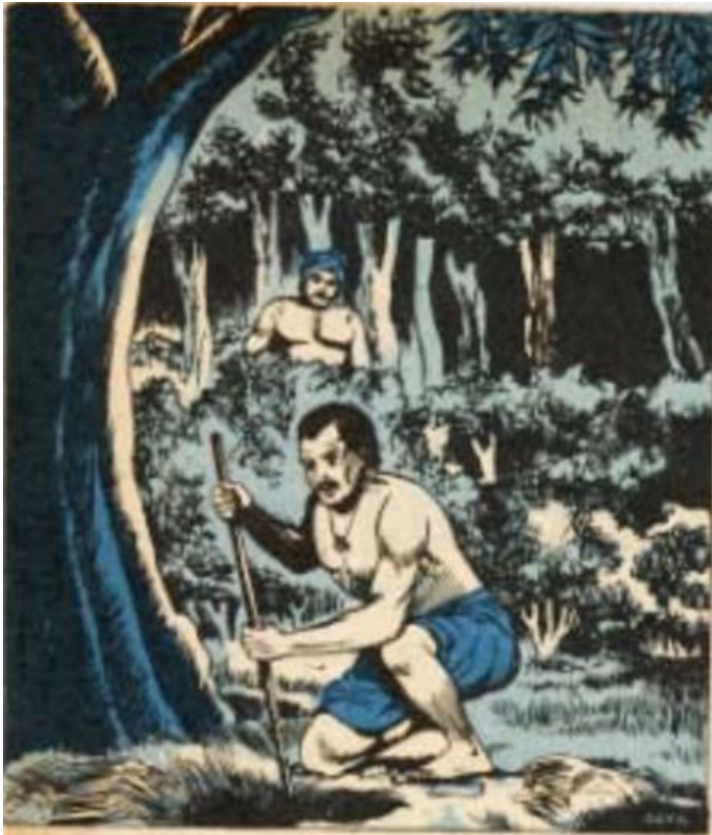
जैसे तैसे बगीचे की सिचाई करता रहा। उस दिन रात को नरसिंग और मोहनसिंग ने अपने-अपने काम की चर्चा की।

नरसिंग बोला—"दोस्त! मेरा काम इतना हल्का था, बस, समझ लो, आराम ही आराम है! बैलों को मैदान में हाँककर मैं एक पेड़ के नीचे सो गया। संध्या के होते होते बैल अपने आप मेरे पास आ गये। उनके गले में बंधी घुंघुरों की आहट पाकर मैं नींद से जाग पड़ा और उन्हें हांककर सीधे घर चला आया।"

"मेरा भी यही हाल,समझ लो! चार बाल्टी भरकर पौधों में उड़ेल दिया, बस सारा बगीचा सिंच गया। सारा दिन खाट पर लेटकर सो गया।" मोहनसिंग ने डींग मारी।

"तब तो एक काम करो, कल तुम बैलों को चरा लाओ, और मैं बगीचे की सिंचाई करूँगा।" नरसिंग ने सुझाया।

यह सुझाव मोहनसिंग को बड़ा अच्छा लगा। वह उछलकर बोला—"मैं भी यही सोच रहा था।"

"मैदान में लेटने के लिए अपने साथ खाट भी लेते जाओ, यह बात मत भूलो।" नरसिंग ने याद दिलाई। दूसरे दिन दोनों ने अपने अपने काम बदल लिये, तब एक दूसरे के धोखे का पता चला।

मगर नरसिंग ने एक विचित्र बात का पता लगाया। वह यह कि बगीचे के एक आम के पेड़ के थाले में बहुत सारा पानी डालने पर भी जल्दी सूखता जा रहा है। इसलिए रात को इस रहस्य का पता लगाने का नरसिंग ने निर्णय किया।

उस दिन रात को नरसिंग और मोहनसिंग ने अपने अपने कामों की बिलकुल चर्चा नहीं की। दोनों सो जाने का अभिनय करते लेट गये। आधी रात के करीब नरसिंग खाट से उठ बैठा, कुदाल लेकर आम के पेड़ के पास गया, उसके थाले में खोदना शुरू किया, थोड़ी देर खोदने के बाद कुदाल से कोई चीज

टकरा गई और खन्खन् की आवाज आई ।

दूसरे ही क्षण नरसिंग ने चारों ओर नजर दौड़ाई; मोहनसिंग अंधेरे में उसकी बगल में खड़ा दिखाई दिया। उसने नरसिंग से पूछा–"क्या बात है? इस रात के वक्त खोदते हो?"

"इस पेड़ का थाला ठीक नहीं है, जब नींद न आई तो सोचा कि थाला बना लें!" नरसिंग ने भोला बनकर कहा।

"अरे, यह खन् खन् की आवाज कैसी?" मोहनसिंग ने पूछा।

"हाँ, कोई पत्थर होगा। चलो, जाकर सो लें।" नरसिंग ने असली बात छिपाने की कोशिश करते हुए कहा।

तब दोनों जाकर लेट गये। नरसिंग ने सोचा कि मोहनसिंग के सो जाने के बाद फिर आकर देख ले कि कुदाल से कौन चीज टकरा गई है! मगर वही पहले सो गया।

नरसिंग जब खर्राटे लेने लगा, तब मोहनसिंग उठ बैठा। कुदाल लेकर आम के पेड़ के पास पहुँचा। थाला खोदकर गड़ा हुआ खजाना निकाला। समीप में एक तालाब था, जहाँ पानी की ज्यादा गहराई न थी, वहाँ पर सोने से भरी हंडियों को गाड़ दिया और चुपचाप लौटकर सो गया।

नरसिंग सवेरे उठा। कुदाल लेकर आम के पेड़ के पास पहुँचा, पर उसे सोने

से भरी हंडियों का पता न चला। उसने लौटकर सोनेवाले मोहनसिंग के पैरों को परखकर देखा। उसके पैरों में कीचड़ और घास चिपकी थी। उसने भांप लिया कि पेड़ के थाले में मिली चीज को मोहनसिंग ने तालाब के पास छिपाकर रखा है। वह सीधे तालाब के पास पहुँचा। तालाब में एक जगह मेंडकों की चहल-पहल न थी। वहाँ पर खोज-ढूँढ़कर नरसिंग ने सोने से भरी हंडियों का पता लगाया। उन्हें कंधे पर रखकर वह सीधे अपने गाँव की ओर चल पड़ा।

थोड़ी देर बाद मोहनसिंग नींद से जागा। बगल में नरसिंग को न पाकर वह सीधे तालाब की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ पर हंडियाँ न थीं। उसने भांप लिया कि नरसिंग हंडियों के साथ अपने गाँव चला गया होगा, वह भी उधर दौड़ पड़ा।

थोड़ी देर तक दौड़ने के बाद उसने हंडियाँ कंधे पर रखकर नरसिंग को तेज़ी से चलते देखा। मोहनसिंग एक पगडंडी से होकर निकट के रास्ते से नरसिंग से भी आगे निकल गया, फिर असली रास्ते पर आकर उसने अपने नये जूतों में से एक को एक जगह छोड़ दिया और दूसरे को सौ गज आगे की दूरी पर छोड़ वहीं पर एक पेड़ पर चढ़ बैठा और पेड़ की घनी टहनियों के बीच छुप गया।

थोड़ी देर में नरसिंग हंडियाँ बड़े मुश्किल से ढोते-ढोते उधर आ पहुँचा। उसे एक नया जूता दिखाई पड़ा। मगर एक ही जूते को पाकर वह निराश हो आगे बढ़ा। सौ गज पार करने पर उसे उस नये जूते की जोड़ी दिखाई दी। उसके मन में लोभ पैदा हुआ। चारों ओर किसी मानव मात्र को न देख उसने हंडियाँ उतारकर नीचे रख दीं, तब वहाँ का एक जूता हाथ में ले दूसरे की खोज में चल पड़ा। मौक़ा पाकर मोहनसिंग पेड़ से उतर पड़ा, रास्ते पर रखी हंडियाँ उठाकर अपने घर पहुँचा।

नये जूते लेकर नरसिंग लौट पड़ा। पर हंडियाँ वहाँ पर न थीं। उसने सोचा कि यह काम मोहनसिंग का ही है, तेज़ी से चलकर उसके घर पहुँचा।

पर नरसिंग के घरवाले सब दहाड़े मारकर रो रहे हैं। नरसिंग ने अचरज में आकर कारण पूछा। इस पर मोहनसिंग की पत्नी व पुत्र सिसक-सिसककर रोते हुए बोले–"भैया, क्या बतावें? वे तो अचानक मर गये हैं।" साथ ही कफन से ढकी उसकी लाश भी दिखा दी।

थोड़ी देर तक उनके सुर में सुर मिलाकर नरसिंग भी रोता रहा, तब बोला–"हम दोनों के बीच अच्छी खासी दोस्ती थी। अब मैं मोहनसिंग की अंतिम इच्छा की पूर्ति करके उसकी आत्मा को शांति प्रदान करूँगा। उसने मुझसे बताया था कि अगर वह मुझसे पहले मर जाय तो उसकी लाश को अरहर के कटे मोड़ों पर खींच दूँ! अब मैं उसकी आखिरी इच्छा की पूर्ति कर देता हूँ।"

यों कहकर नरसिंग ने मोहनसिंग की लाश को कंधे पर डाल लिया, सब के मना करते रहने पर भी परवाह किये बिना कटे अरहर के खेत के पास ले गया।

खेत में कटे अरहर के मोड़ों को, जो जमीन में गड़े तलवारों की भांति पैनी थे, देखते ही मोहनसिंग के प्राण सूख गये। यदि अब भी वह चुप रहा तो नरसिंग उसे अरहर के कटे मोड़ों पर खींच देगा, यह सोचकर वह कांप उठा।

फिर क्या था, मोहनसिंग झट से उठ बैठा और नरसिंग के पैर पकड़कर बोला– "भैया, मुझे माफ कर दो। हमने चोरी का पेशा बंदकर ईमानदारी से जीने का निश्चय कर लिया है न? अब चोरी की यह बुरी लत ही क्यों? दो हंडियाँ हैं, बराबर सोना बांटकर आराम से अपने दिन बितायेंगे।"

इसके बाद हंडियों का सोना दोनों ने आधा-आधा बांट लिया, धनी बनकर सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगे।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मार्च १९८० के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

Devidas Kasbekar

★

Anant Desai

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों ।

★ जनवरी १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा ।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

नवंबर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : बिनती सुन लो हे भगवान !

द्वितीय फोटो : हम दोनों बालक नादान !!

प्रेषिका : अलका गर्ग, पाडिया सदन, पिलानी, राजस्थान

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी ।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

हुर्रे
असोका ग्लूकोज
मिल्क बिस्कुट!
ASOKA
GLUCOSE
Asoka
Glucose
Asoka
असोका ग्लूकोज मिल्क बिस्कुटों
हर पल
असोका
के साथ
असोका बिस्किट्स हैदराबाद आ. प्र.
असोका केस्पो तथा केस्पोक्रेक के निर्माता

राजू बिना ब्रश के पेंटिंग करता है

राजू बहुत होशियार लड़का था. उसे पेन्टिंग करना बहुत अच्छा लगता था. लेकिन पेन्टिंग करते वक्त उससे पानी गिर जाता था और फर्श गन्दा हो जाता था. उसके कपड़े और हाथ भी रंग जाते थे.

माँ को उसकी हरकतें पसन्द नहीं थीं. इसलिए उन्होंने पेन्टिंग करना मना कर रखा था.

मोहन को राजू पर तरस आया. उसने राजू को अपने 'ऑइल पेस्टल' के डिब्बे दिखाये. न पानी की ज़रूरत, न ब्रश की. न पानी फैलने का डर, न फर्श खराब होने का.

डिब्बे से किसी भी रंग का पेस्टल उठाओ और चित्र बनाना शुरू कर दो...और रंग भी कितने सारे! पैरट ग्रीन, लॉब्स्टर ऑरेन्ज, पीकॉक ब्लू, सनफ्लावर यलो... और भी न जाने कितने.

फिर तो राजू की माँ ने भी उसे ऑइल पेस्टल का एक डिब्बा ला दिया.

VISION 782 HIN

कॅमल

ऑइल पेस्टल्स

१२, २४ और ४८ रंगों में उपलब्ध

कॅम्लिन प्रायव्हेट लि.
आर्ट मटीरियल डिविज़न,
बम्बई-[illegible].
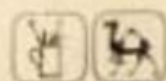
[illegible] बनानेवालों की ओर से

Results of Chandamama—Camlin Colouring Contest No. 11 (Hindi)

1st Prize: Pramod Minhas, New Delhi-110 064. *2nd Prize:* V. Syam, Lucknow-226 011. *3rd Prize:* Anita Yadaorao Satone, Wardha. *Consolation Prizes:* Brijesh Kumar, Garhwal (U.P.); Deepkumar R., Kalyan (C.R.); Surbjeetsingh, Bombay-400 083; Meena Shah, Delhi-9; Pratap Govindrao, Gangakhed.

तथ्यः कुरकुरे, ताज़े और मशहूर पारले बिस्कुटों के नक्काल बेशुमार हैं.

सिद्ध करना है कि : पारले बिस्कुटों की शक्लो-सूरत की नकल चाहे कोई कर भी ले, पर स्वाद की हरगिज नहीं!

प्रमाण : (अ) नाम की परख :

नाम के हिज्जों पर ध्यान दीजिये. ये वाकई P-A-R-L-E ही है ना? P-E-A-R-L या P-E-R-L-E तो नहीं? इसी तरह G-L-U-C-O के बारे में भी पक्का कर लीजिये, कि कहीं वह G-L-U-C-O-S-E तो नहीं? अगर आप पारले ग्लुको खुले भी खरीदना चाहें, तो बिस्कुटपर लिखा नाम पढ़कर तसल्ली कर लीजिये, कि बिस्कुट असली पारले ग्लुको ही है.

(ब) पैकेट की परख :

हमारे रंगीन पैकेट पर प्यारे-से बच्चे की तस्वीर देखिए. यह आपके लिये विशुद्धता की गारंटी है.

(क) स्वाद की परख :

ज़रा एक बिस्कुट चख कर तो देखिये. अगर इसमें वो जाना-पहचाना कुरकुरापन और ताज़ापन मौजूद है, तो यह असली पारले ग्लुको ही है.

यही सिद्ध करना था

दुश्मन का नाश!
Binaca
Binaca Fluoride
अधिक मजबूत दाँत,
दंत-क्षय की रोकथाम — बिनाका फ्लोराइड.

आपके बालों को
जरूरत है
रीटा द्वारा
देखभाल की
रीटा बालों को सवारने का एक उत्तम साधन है.
जो बहुत ही गाढ़ा और मोहक सुगंधवाला है।
इससे बाल नैसर्गिक रूप से घने बढ़ते हैं
और यह दिमाग को ठंडक पहुंचाता है।
'रीटा' स्त्री व पुरुष दोनों के लिए
श्रेष्ठ तेल है।
RITA
रीटा
RITA
रीटा से बाल सुंदर बढ़ते हैं।
एक शीशी आज ही खरीदिये।
हर जगह मिलता है।
बेटो कंपनी, बम्बई • कलकत्ता • मद्रास
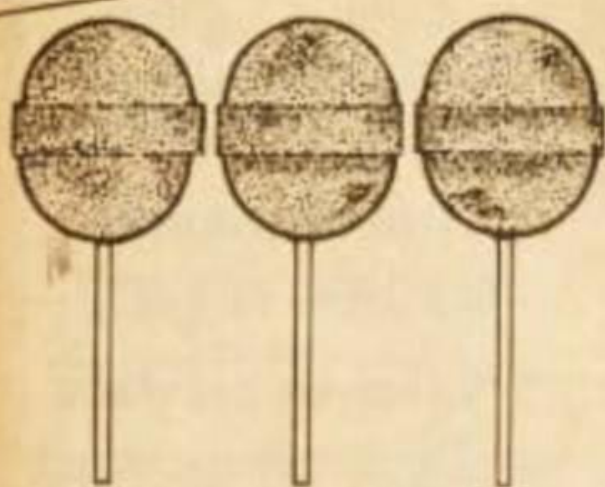
CHANDAMAMA (Hindi)
JANUARY 1980
Regd. No. M. 5452
नन्हे मुन्ने
प्यार चाहते, प्यार मिले तो बढ़ते जाते
प्यार का उपहार
पारले ग्लूको–
स्वाद में निराले
शक्ति से भरपूर
दूध, गेहूं, शक्कर और ग्लूकोज़ के
स्वाद और पौष्टिक गुणों से भरपूर.
PARLE
Gluco
पारले
ग्लूको
भारत के सबसे ज़्यादा बिकनेवाले बिस्किट.